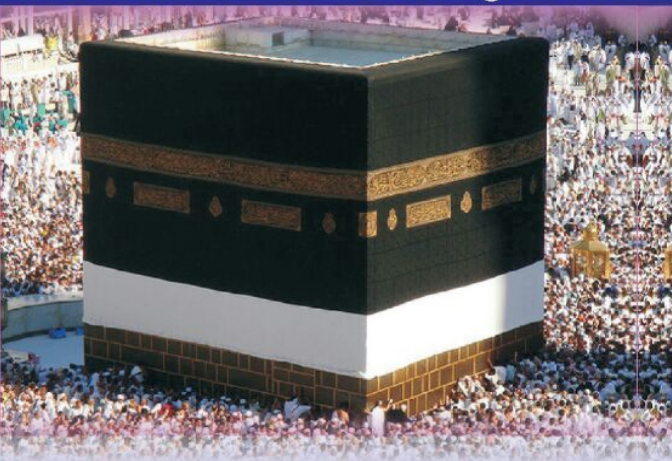


आसान हज

हज उमरह और जियारते मदीना मुनव्वरह



तालिफ
हज़रत मौलाना हिफज़ुर्रहमान पालनपूरी (काकोसी)

وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ (سورة البقرة)

तरजमा : और पूरा करो हज और उमरह
अल्लाह के लिये ।

आसान हज

हज उमरह और
ज़ियारते मदीना मुनव्वरह

हज के आमाल व अरकान को दर्जा बदर्जा (step by step)
बयान किया गया है के हाजी को हर ऐक अमल के बाद दुसरा
अमल किया करना है । इस से किताब न सिर्फ आसान होगी
बल्के गाइड का काम करेगी । इन्शा अल्लाह

तालिफ

हज़रत मौलाना हिफज़ुर्रहमान पालनपूरी (काकोसी)

नाम किताब : असान हज

तालिफ : हज़रत मौलाना हिफज़ुर्रहमान
पालनपूरी (काकोसी)

सेटिंग और डिज़ाइन : रहमानी गिराफि, मुम्बई
९२७०७०८९६३

सफहात : १५६

इल्तेमास

कारिडिन से गुज़ारिश है के किताब में किसी तरह की कोइ गलती देखें या कोइ मश्वरा देना चाहें तो ज़रूर आगाह फरमरएँ ताके अ इंडा एडीशन में इस का लिहाज़ किया जाए.

फकत : हिफज़ुर्रहमान पालनपूरी (काकोसी)

०९३२३८७२१६१

गुज़ारिश

जो साहब आसान हज उर्दू, हिन्दी या गुजराती
ज़बानों में छपवाना चाहते हों तो किताब में
बगैर घटाए बढाए छापने की मोअल्लिफ की
तरफसे एजाज़त है।

हिफज़ुर्रहमान पालनपूरी (काकोसी)

०९३२३८७२१६१

मिलने के प ते

स्टाकिस्ट

मकतबा मिल्लत देवबंद ज़िला सहारनपूर

यूपी

फोन : ९३३६२२५२६८

फिरदौस किताब घर बम्बइ

फोन : ९८९२९८४२५८

फेहरिसत

अनावीन	स. न.
दुआईया कलिमात	१
अर्ज़ हाल	२
नज़म (तस्सवुरे काबा)	३
नात (सरकारे मदीना)	४
हज की असल तयारी क्या है ?	६
हजे मबरूर क्या है ?	८
अल्लाह का अज़ीम इनाम	९
हज व उमरह के फ़ज़ाईल	११
हज न करने पर वईद	१४
सफ़रे हज से पहले ज़रूरी काम	१५
हुज्जाजे किराम से गुज़ारिश	१६
घर से रवानगी	१७
एहराम का तरीक़ा और तरतीब	१८
हज की तीन सूरतें	२०
हज की तीन क़िस्मों में फ़र्क़	२१

नीयत कैसे करें	२२
एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं?	२३
औरत का एहराम	२५
मक्का की तरफ़ रवानगी और जिद्दा	२७
जिद्दा से मक्का मुअज़्ज़मा	२७
मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िला	२९
बैतुल्लाह पर हाज़री	३०
उमरह और उस का तरीका	३२
तवाफ़ का तरीका	३३
तवाफ़ के दौरान सलाम व कलाम	३६
तवाफ़ के बाद की दो रकात	३७
उमरह का तीसरा काम	३९
उमरह का चौथा काम	४१
हलक़ और क़स्र की मुख़्तलिफ़ सूरतें	४२
उमरह के बाद से अय्याम हज तक	४४
मक्का में नमाज़ कैसी पढ़ें? क़स्र या पूरी	४७
हज के पाँच दिन	४९

हज का पहला दिन ८ ज़िलहिज्जा	५०
हज का दूसरा दिन ९ ज़िलहिज्जा	५१
अरफ़ात के मामूलात	५५
मुज़दलिफ़ा की तरफ़ रवांगी	५६
हज का तीसरा दिन १० ज़िलहिज्जा	५८
दस तारीख़ का पहला काम	६०
रमी में नाइब बनाना कब जाइज़ है?	६१
१० ज़िल हिज्जा का दूसरा काम	६२
१० ज़िल हिज्जा का तीसरा काम	६३
१० ज़िल लिज्जा का चौथा काम	६४
तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई	६५
हज का चौथा दिन ११ ज़िलहिज्जा	६७
हज का पाँचवां दिन १२ ज़िलहिज्जा	६८
रमी की फ़ज़ीलत	७०
तवाफ़े वदा	७०
नक्शा हज व उमरह	७२
उमरह का नक्शा	७२

हज का नक़शा	७३
ज़ियारते मदीना मुनव्वरा	७५
दयारे हबीब का सफ़र	७६
मदीना तय्यिबा में दाखला	७६
मस्जिदे नब्वी में हाज़री	७७
मस्जिदे नब्वी के सुतून और रियाज़ुल जन्नह	७९
रौज़-ए-अक़दस पर दुरूद व सलाम	८०
दूसरों की तरफ़ से रौज़-ए-अक़दस पर सलाम	८२
हज़रत अबू बक्र सिदीक <small>رضي الله عنه</small> पर सलाम	८३
हज़रत उमर फ़ारूक <small>رضي الله عنه</small> पर सलाम	८४
ज़ियारते जन्नतुल बक़ी	८५
मस्जिदे नब्वी में नमाज़ का सवाब	८७
मस्जिदे नब्वी में चालीस नमाज़ें	८७
मदीना तय्यिब से वापसी	८८
हजे बदल के फ़जाइल व मसाइल	८९
इबादत की तीन क्रिस्में हैं	९०
मक़ामाते क़बूलियते दुआ	९३

मक्का के तारीखी और मुतबर्क मक्कामात	९४
मदीना के तारीखी और मुतबर्क मक्कामात	१००
<i>तवाफ़ के सात फ़ेरों की और मौका महल की बाज़ दुआँ</i>	१०५
घर से निकलने की दुआ	१०६
सवारी पर सवार होनी की दुआ	१०६
दौराने सफ़र पढ़ते रहने की दुआ	१०७
हुदूदे हरम में दाखिल होने की दुआ	१०८
तवाफ़ शुरू करने की दुआ	१०८
तवाफ़ के सात फ़ेरों की दुआँ	१०९
तवाफ़ के पहले चक्कर की दुआ	१०९
रुकने यमानी और हज़रे अस्वद के दर्मियान पढ़ने की दुआ	१११
तवाफ़ के दूसरे चक्कर की दुआ	११२
तवाफ़ के तीसरे चक्कर की दुआ	११३
तवाफ़ के चौथे चक्कर की दुआ	११५
तवाफ़ के पांचवें चक्कर की दुआ	११६

तवाफ़ के छटे चक्कर की दुआ	११८
तवाफ़ के सातवें चक्कर की दुआ	१२०
तवाफ़ की दो रकात के बाद मक़ामे इब्राहीम पर पढ़ने की दुआ	१२०
मुलतज़म पर पढ़ने की दुआ	१२२
मीज़ाबे रहमत के नीचे पढ़ने की दुआ	१२३
ज़मज़म पीने की दुआ	१२४
सफ़ा पर चढ़ने की दुआ	१२५
सफ़ा और मरवा पर खड़े हो कर पढ़ने की दुआ	१२५
मीलैन अख़ज़रैन के दर्मियान पढ़ने की दुआ	१२६
मीलैन अख़ज़रैन के बाद मरवा की तरफ़ चलने की दुआ	१२७
अरफ़ात की तरफ़ जाते हुए पढ़ने की दुआ	१२७
जब्ले रहमत पर नज़र पड़ते वक़्त पढ़ने की दुआ	१२८
मैदाने अरफ़ात में सब से अफ़ज़ल दुआ	१२९
मुज़दलिफ़ा की रात में पढ़ने की दुआ	१३१
मुज़दलिफ़ा से मिना पहुँच कर पढ़ने की दुआ	१३२

जमरात की रमी के बाद की दुआ	१३२
हलक़ की दुआ	१३३
मक्का मुअज़्ज़मा से वापसी की दुआ	१३३
मदीना मुनव्वरा के करीब पहुँच कर पढ़ने की दुआ	१३५
मदीना मुनव्वरा में दारुब्ले के वक़्त पढ़ने की दुआ	१३५
रौज़-ए-अक़दस पर सलात व सलाम	१३७
रसूलुल्लाह के वसीले से शफ़ाअत की दुआ	१३९
दूसरों की तरफ़ से सलाम	१४०
हज़रत अबु बकर सिद्दीक <small>رضي الله عنه</small> पर सलाम	१४१
हज़रत उमर <small>رضي الله عنه</small> पर सलाम	१४१
जन्नतुल बक्री वालों पर अलफ़ाज़ साम	१४२
मदीना मुनव्वरा से वापसी की दुआ	१४३
ख़तम शुद	१४४
मोअल्लिफ़ की दीगर मुफीद किताबें	१४५

दुआइया कलिमात

शेखे तरीक़त हज़रत

मौलाना क्रमरुज़्ज़मा साहब इलाहबादी

अर्ज़ है के मौलाना हिफ़ज़रुहमान साहब कासमी पालनपुरी (काकोसी) की तसनीफ़ “आसान हज” पर सरसरी निगाह डाली जिस से बख़ूबी अन्दाज़ा हुआ के माशाअल्लाह मुसन्निफ़ ने निहायत वाज़ेह और आसान तरीक़े से हज के फ़ज़ाइल व मसाइल को तहरीर फ़रमाया है। जिस से इन्शाअल्लाह जुमला हुज्जाजे किराम को हज व उमरा के सिलसिले में बेहतरीन रहबरी व रहेनुमाई मयस्सर होगी।

इस लिये हुज्जाजे किराम से गुज़ारिश है के इस को अपने पास रखें और मुताला करें। इन्शाअल्लाह इस से मक्रबूल व मबरूर हज की दौलत नसीब होगी और अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी का शर्फ़ हासिल होगा।

इस की इफ़ादियत व क्रबूलियत के लिये दिल से दुआ करता हूँ और मौलाना हिफ़ज़रुहमान साहब के लिये भी दुआ करता हूँ के अल्लाह तआला उन की सई को क्रबूल फ़रमाए। आमीन और मज़ीद कुतुबे नाफ़ेआ की तसनीफ़ मरहमत फ़रमाए। आमीन।

वस्सलाम

मुहम्मद क्रमरुज़्ज़मा इलाहबादी

१६ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र १४२७ हिजरी

अर्जे हाल

हज के मौजू पर उलमा ने छोटी बड़ी बहुत सी किताबें लिखी हैं, सारी ही किताबें अपनी जगह पर और अपने मौजू के लिहाज से निहायत मुफ़ीद और क़ीमती हैं।

ज़ेरे नज़र किताब “आसान हज” इसी सिलसिले की एक कड़ी है, इस में खास तौर पर अवाम की ज़हनियत को सामने रखते हुए निहायत ही आसान ज़बान में “हज व उमरह” और ज़ियारते मदीना को बयान किया गया है और अन्दाज़ ऐसा इस्तिथार किया गया है के इन्शाअल्लाह पढ़ने वाले यह महसूस किए बग़ैर नहीं रहेंगे के वह तन्हा हज नहीं कर रहे हैं बलके एक अच्छा रफ़ीक़ उन की पूरी पूरी रहबरी कर रहा है और उन्हें हज के अरकान अदा करने में लुतफ़ आ रहा है इसी के साथ हज व उमरा का नक़शा, मक़ामाते क़बूलियते दुआ और मक्का मदीना के तारीख़ी मक़ामात की मुख़्तसर तौर पर निशान्दही भी की गई है और अख़ीर में घर से निकलने से ले कर लौटने तक मौक़ा महल की जामे दुआएँ भी दर्ज की गई हैं। अल्लाह तबारक तआला इस किताब को शर्फ़े क़बूलियत से नवाज़ कर उम्मत के हक़ में नाफ़े बना दे।

वमा ज़ालिक अलल्लाही बिअज़ीज़

ई दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद

हिफ़ज़ुरहमान पालनपुरी (काकोसी)

उफ़ी अन्हु व अन वालिदिया

नज़म (तसव्वुरे काबा)

अज़ : हज़रत उरूज क़ादरी

तसव्वुर में तेरे है लुतफ़ इतना तुझ में क्या होगा
तेरे दीवार व दर हैं आईना इस की तजल्ली का
जमाले लम यज़ल का मज़हरे मख़्सूस तू है जब
तेरा जब सामना होगा तड़प उठेगा मेरा दिल
नदामत के पसीने मेरी पेशानी पर उभरेंगे
लिपट कर तेरे दामन से कहूँगा अपनी सब हालत
पुकार उठूँगा रब्बुलबैत रब्बुलबैत आख़िर को
वह दीने हक़ के जिस का तू ही मरकज़ सब से पहला है
तेरे दीदार से क़लबे हज़ी का गुन्चा वा होगा
मेरी चश्मे बसीरत के लिए तु आईना होगा
तेरे आईनए रहमत में ख़ुद वह रूनुमा होगा
मेरी आँखों से अशके ग़म मुसलसल बह रहा होगा
मेरा दिल अपनी इसयाँ परवरी पर जल उठा होगा
ना जाने किस तरह मुझ से बयाने मुद्आ होगा
तेरे मालिक की रहमत मेरा तन्हा आसरा होगा
निसार उस दिन पर मेरा सरापा हो रहा होगा
बिलक कर कह रहा है जाने क्या क्या तेरे गोशे में
अजब अन्दाज़ है उस का यह कोई दिल जला होगा

नात (सरकारे मदीना)

अज़ : मौलाना नसीम अहमद फ़रीदी

सरापा चमन है दयारे मदीना

दवाम आशाना है बहारे मदीना

मदीने के फूलों को क्या पूछते हो

रगे गुल है हर नोके खारे मदीना

दिलों पर है जिस की हुकुमत का सिक्का

ज़हे शौकते ताजदारे मदीना

किसी चीज़ की उस को हसरत नहीं है

मयस्सर हो जिस को गुबारे मदीना

ये मस्जिद ये मिम्बर ये रोजा ये गुंबद

है फ़िरदौस हर यादगारे मदीना

वहाँ की ज़मीन अर्श से भी है आला

जहाँ दफ़न है ताजदारे मदीना

तहज़ुद तिलावत, तज़ज़रुअ् , दुआँ

ख़ौशा सईअे शब ज़िन्दा दारे मदीना

हुनैन व तबूक और बदरो उहद में

सफ़ आरा हुए शहसवारे मदीन

किबारे मदीना तो यूँ ही बड़े हैं

बड़ों से बड़े हैं सिगारे मदीना

तमन्ना है उम्रे रवाँ अपनी गुज़रे

ब हमराहे लैलो नहारे मदीना

फ़रीदी चलो चल के रौज़े पे कहना

सलाम आप पर ताजदारे मदीना

हज की असल तय्यारी क्या है ?

हज बहुत ही अहम और बहुत ही बड़ी इबादत है, इसी लिए हज के आमाल के शुरु की दुआओं में यह अलफ़ाज़ है

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

ऐ अल्लाह मैं हज का इरादा करता हूँ तू इस को आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा।

आप (ﷺ) ने आसानी भी अल्लाह से मांगी और क़बूलियत भी मांगी, लिहाज़ा हमें भी अपनी दुआओं में यह अलफ़ाज़ लाने हैं के ऐ अल्लाह हज को आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा।

हज बड़ा फ़रीज़ा है, इस के बड़े बड़े फ़ज़ाइल हैं, इस लिए इस को सीख कर करना है, समझ कर करना है, और हज में जाने से पहले हमें अपने दिल की कैफ़ियात बनानी हैं, इस तौर पर के हमारा दिल अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा हो, दीन का शौक़ व रग़बत पैदा हो, हुज़ूर (ﷺ) से मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो, और आप के तरीक़ों में मज़ा आने लगे, नमाज़

और दुआओं में एहतेमाम होने लगे, नमाज़ों को जानदार बनाने का फ़िक्र पैदा हो जाए, और यह उसी वक़्त हो सकता है जब हज से पहले हम अपने माहौल से यक्सू हो कर कुछ दिन दीन की मेहनत और फ़िक्रों में नूरानी माहौल में गुज़ारें ता के दिल की कैफ़ियात सही हों और कुछ रोज़ मुकम्मल यक्सू हो कर हज का तरीक़ा इस के आमाल, अरकान और मुतबर्क जगहों के आदाब सीखें ।

कितनी बड़ी महरुमी की बात होगी के हम इतना बड़ा सफ़र करें, इतना बड़ा ख़र्च करें, इतनी बड़ी अहम इबादत का फ़रीज़ा अदा करें और बेफ़िक्री के साथ हो, बग़ैर समझे सीखे हो, बग़ैर दिल की कैफ़ियात बनाए हुए हो, जिस का नतीजा यह होता है इन मुबारक जगहों के क़ीमती औक़ात भी बे फ़िक्री के साथ गुज़र जाते हैं । न कोई अदब का पास व लिहाज़ होता है न कोई ताज़ीम व अज़मत है, न ताअत व इबादत में हुज़ूरे क़ल्ब नसीब होता है न गुनाहों से बचने का कोई ख़ास एहतेमाम होता है, बस यूँ ही एक सैर व तफ़रीह की शक़ल बन के रह जाती है । अल्लाहुम्मा अहफ़ज़ना मिन्हु ।

मुतबर्क मक़ामात की ताअत व इबादत पर जैसे हज़ारों

गुना इज़ाफ़े के साथ अज़्र मिलता है ऐसे ही वहाँ की बे फ़िक्री, नाफ़रमानी और गुनाह पर पकड़ भी सख़्त है, लेकिन इस से भी ला परवाही होती है, इस का नतीजा यह होता है के हज से लौटने के बाद भी वह चीज़ हासिल नहीं होती जो एक हाजी को हासिल होनी चाहिये और वह कैफ़ियत नहीं बनती जो अल्लाह के ध्यान के साथ हुज़ूर के नूरानी तरीक़ों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने पर और दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत की फ़िक्रों वाली राह पर डाल दे जब के हज से यही मतलूब है।

हज मबरूर क्या है ?

रसूलुल्लाह ﷺ ने इश़ाद फ़रमाया :

“**الْحَجُّ الْمَبْرُورُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ**”

हज मबरूर का बदला सिवाए जन्नत के कुछ नहीं है। (बुखारी)

हज मबरूर की तशरीह में बहुत सारे अक़वाल हैं, उन में एक क़ौल हज़रत हसन बसरी रह. का है के हजे मबरूर से मुराद ऐसा हज है के उस हज के बाद हाजी की ज़िन्दगी में तब्दीली आ जाए, दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत की

तलब और शौक पैदा हो जाए। बहुत से लोग इस गलत फ़हमी में रहते हैं के वहाँ जा कर मुअल्लिम सिखाएगा या वहाँ लोगों से सीख लेंगे, इस खुश फ़हमी में नहीं रहना चाहिये बल्के पहले ही तय्यारी कर लेना चाहिये।

अल्लाह का अज़ीम इनाम

बहुत दिनों से सुन रहे थे, बचपन में पढ़ा था के मक्का एक शहर है, जहाँ हमारे नबी पैदा हुए, जहाँ अल्लाह का घर है, आज आप के लिये वह दिन करीब आ गए के आप अपनी आँखों से देखेंगे। अल्लाह तआला ने आप हज़रात को अपने घर की ज़ियारत के लिये मुन्तख़ब किया यह अल्लाह का कितना अज़ीम इनाम है। क्या इस की क़दरदानी ज़रूरी नहीं है ? अल्लाह के कितने बन्दे हैं जो बेचारे ज़िन्दगी भर तमन्नाएं करते हैं, अरमान रखते हैं, उन की आरज़ू और तमन्नाएं पूरी नहीं होती और दुनिया से चल बस्ते हैं। यह सआदत हर एक के मुक़द्दर में नहीं होती। कितने लोग हैं जो आज भी इस के लिये तड़पते हैं। क्या आप पर इस का खुसूसी फ़ैज़ान नहीं है ? लिहाज़ा इस की क़दर दानी और फ़िक्र व एहतेमाम करें के फ़राइज की पूरी पाबन्दी, नवाफ़िल

का एहतेमाम, खिदमते खल्क का जज़बा, हरम के बाशिन्दों
 का एहतेराम, अहले मदीना की ताज़ीम और उन की
 खिदमत, लोगों की राहत रसानी, किसी को अदना तकलीफ़
 देने से परहेज़, किसी की सख्त सुस्त बात पर और
 नागवारियों पर सब्र व ज़ब्त और माफ़ करने का मिजाज़,
 कमज़ोरों, माज़ूरों की खिदमत, बे कसों, बे बसों की दस्त
 गीरी, मोहताजों की मदद, हमसायों की मुकम्मल रिआयत,
يُؤْتِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ
 का मुकम्मल मुज़ाहिरा, सिफ़ाते हमीदा, सब्र, शुक्र,
 तवक्कुल, तवाज़ो व अब्दियत आजिज़ी और इन्केसारी,
 ज़िक्र, इस्तेगाना दुआओं की कसरत, हर मौक़े पर निगाह
 सिर्फ़ अल्लाह पर और अपनी ज़ात की मुकम्मल नफ़ी, इन
 तमाम उमूर की मशक़ करें और इस की रिआयत के साथ
 सफ़र पूरा हो, हज का सफ़र भी और ज़िन्दगी का सफ़र भी।
 यह तो ऐसे उमूर हैं के बरसहा बरस इस की तय्यारी की जाए
 तो कोई बड़ी बात नहीं, कुछ अजब नहीं के सैंकड़ों अल्लाह
 के बन्दों की तरह हम को भी इस का एहसास हो और हम भी
 सूफ़ी की ज़बान में इस तरह गोया हों।

यह हसरत रह गई पहले से हज करना न सीखा था
 कफ़न बरदोश जा , पहुँचा मगर मरना न सीखा था
 न रहबर था न रह रौ था न मन्ज़िल आशना था मैं
 मुहब्बत का समन्दर दिल की कशती ना खुदा था मैं
 हवाएं थी तलातुम था सफ़ीना डगमगाता था
 बड़ा गहरा समन्दर था जिधर नज़रें उठाता था
 वह मोती तह नशीन थे मैं मुसाफ़िर जिन का जो या था
 कहाँ मोती कहाँ मैं खुद सफ़ीना ही डुबोया था
 लिहाज़ा पहले से तय्यारियाँ कर लें, यही असल
 तय्यारी है, यह नहीं के अपना समान इकट्ठा करें, बेग़ तय्यार
 करें, सामान की दौड़ धूप में लग जाएं, खाने पीने की अशिया
 मुहैया करें, यह तय्यारी नहीं है बल्के यह तो ज़रूरियात हैं।

हज व उमरह के फ़ज़ाइल

हज़रत अबू हु़रैरह رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह
صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : जो शरूस् अल्लाह की खुशनूदी के लिये
 हज करे और (अस्नाए हज में) फ़हश गोई से बचे और ना
 फ़रमानी न करे तो वह गुनाहों से ऐसा पाक हो कर लौटेगा
 जैसे उस दिन पाक था जब उस की माँ ने जना था (बुख़ारी/मुस्लिम)

हज़रत बुरैदा رضي الله عنه से रिवायत है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया हज में खर्च करना जिहाद में खर्च करने की तरह है।

हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है के हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया हाजी कभी फ़क़ीर नहीं हो सकता। (तबरानी)

हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها की एक हदीस में है के हज और उमरह की कसरत फ़क़ को रोकती है।

हज़रत अबू हु़रैह رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया हज व उमरह करने वाले अल्लाह तआला के मेहमान हैं , अगर वह अल्लाह तआला से दुआ करें तो दुआ क़बूल फ़रमाए अगर वह मग़ि़रत तलब करें तो वह उन की मग़ि़रत फ़रमाए। (इब्ने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया जब किसी हाजी से तुम्हारी मुलाक़ात हो तो उस के अपने घर में पहुँचने से पहले उस को सलाम करो और मुसाफ़ा करो और उस से अपनी मग़ि़रत की दरख़्वास्त करो, क्यों के वह इस हाल में है के

उस के गुनाहों की मग़फ़िरत हो चुकी है। (मिशकात)

हज़रत अबू मूसा अश़री رضي الله عنه की एक रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने इशाद फ़रमाया के हाजी की सिफ़ारिश उस के घराने के चार सौ आदमियों के बारे में क़बूल होती है और हाजी अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे के पैदाइश के दिन था।

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है के जो शख्स हज या उमरह के इरादे से या राहे खुदा में जिहाद के लिये निकला फ़िर रास्ते में उस का इन्तेक़ाल हो गया तो अल्लाह की तरफ़ से उस के लिये वही अज़्र व सवाब लिख दिया जाता है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले और हज व उमरह करने वाले के लिये होता है। (बैहकी)

एक हदीस में है के हज में जो भी खर्च होता है उस का सवाब सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रिवायत है के हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया जो शख्स हज का इरादा करे उस को जल्दी करना चाहिये।

हज न करने पर वर्इद

हज़रत अली رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इशाद फ़रमाया जिस शख्स के पास इतना खर्च हो और सवारी का इन्तेज़ाम हो के बैतुल्लाह शरीफ़ जा सके और फिर वह हज न करे तो कोई फ़र्क़ नहीं इस बात में के वह यहूदी हो कर मर जाए या नसरानी हो कर मरे। इस के बाद हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने अपने इस इशाद की ताइद में यह आयत पढी :

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتِطَاعَ اِلَيْهِ
سَبِيْلًا وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ

(आले इमरान)

तर्जमा : अल्लाह जल्ल शानुहू के वास्ते लोगों के ज़िम्मे बैतुल्लाह का हज (फ़र्ज़) है जो वहाँ पहुँचने की ताक़त रखते हो और जो मुन्किर हो तो (अल्लाह तआला का क्या नुक़सान है) अल्लाह तआला तमाम जहाँ से गनी है (उन को क्या परवाह?)

हज़रत इब्ने उमर رضي الله عنه से नक़ल किया गया है के जो शख्स तन्दुरुस्त हो और पैसे वाला हो के हज को जा सके

और फिर बगैर हज किये मर जाए, क़यामत के दिन उस की पेशानी पर काफ़िर लिखा हुआ होगा । इस के बाद उन्होंने वह आयते शरीफ़ा पढ़ी जो ऊपर गुज़री । (दुर्गे मन्सूर)

सफ़रे हज से पहले ज़रूरी काम

हज का सफ़र शुरू करने से पहले कुछ काम ज़रूर कर लें जिन का करना शरअन ज़रूरी है ।

पहला काम : तौबा कर लें के इस मुबारक सफ़र में अपनी निय्यत दुरुस्त कर लें, निय्यत सिर्फ़ यह हो के अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिये और उस को राज़ी करने के लिये मैं हज कर रहा हूँ, दुनिया की इज़्ज़त, शोहरत, नाम व नमूद, दिखावा, कोई तिजारती फ़ायदा या दुनिया की कोई ग़र्ज़ बिल्कुल न हो, वरना इतना बड़ा अमल और इतनी बड़ी कुरबानी ज़ाए और बरबाद हो जाएगी, क्यों के जिस अमल में निय्यत फ़ासिद होती है वह अमल अल्लाह के यहाँ मरदूद हो जाता है, लिहाज़ा निय्यत को ख़ूब टटोलें और दुरुस्त कर लें ।

दूसरा काम : यह कर लें के ख़ानगी से पहले अपने तमाम छोटे बड़े गुनाहों से ख़ूब सच्ची पक्की तौबा कर लें, ख़ूब गिड़ गिड़ा कर नदामत के साथ अपने गुनाहों का इक़्रार करते हुए

आइन्दा न करने के अज़्म के साथ अल्लाह तआला से माफ़ी माँग लें । ताके आप गुनाहों की गन्दगी से साफ़ सुथरे हो कर अपने मौला के दरबार में पहुँचें ।

तीसरा काम : यह के अल्लाह के जिन बन्दों के हुकूक आप के ज़िम्मे हैं जिन की कभी हक़ तलफ़ी हुई, सताया हो, जिन का कभी दिल दुखाया हो, जिन का अपने ऊपर कोई माली हक़ बाक़ी रह गया हो, किसी का क़र्ज़ अपने ज़िम्मे हो, इन तमाम से मिल कर मामला साफ़ कर लें, ख़ूब माफ़ी तलाफ़ी कर लें, और जिन का किसी तरह का कोई हक़ निकल रहा है उन को अदा कर दें । और जिन उमूर के मुतअल्लिक़ वसिय्यत करनी हो उन के मुतअल्लिक़ वसिय्यत नामा लिख दें । इन तमाम उमूर को पूरे एहतेमाम के साथ करें । इन में कोई शर्म व आर न करें ताके हज आप के लिये दुनिया और आख़िरत में कामयाबी और सालेह ज़िन्दगी का ज़रिया बने ।

हुज्जाजे किराम से गुज़ारिश

हुज्जाजे किराम से गुज़ारिश है के सफ़रे हज से पहले जहाँ आप हज का तरीक़ा और उस के अरकान सीख रहें हों, वहीं जनाज़े की नमाज़ भी पूरी सीख लें, ख़ास कर जनाज़े की

दुआएं क्यों के हरम में हर नमाज़ के बाद जनाज़े की नमाज़ होती है, इस की बड़ी फ़ज़ीलत है, लिहाज़ा सीख लेना चाहिये।

घर से खानगी

अब आप अपने घर से खाना हो रहे हैं, वह मुबारक घड़ी आ गई है, खानगी से पहले हो सके तो दो रकात नफ़ल पढ़ ले और नमाज़ के बाद सफ़र में सहूलत व आफ़ियत की, गुनाहों से बचने की, हज की क़बूलियत की दुआ करें, निकलने से पहले अपना सामान पूरा मुनज़ज़म कर लें, ज़रूरियात का सामान ले लें, ज़्यादा बोझ न बनाएं और जो चीज़ मन्मू हैं वह न लें, मसलन चाकू, खन्जर, तेल, घी, विडियो, आडियो केसिट वगैरा ता के कस्टम में परेशानी न हो और अपने सामान को अच्छे बैग में बाँध कर उस पर बड़े हुरूफ़ में पूरा ऐड्रेस (पता) लिखें, मुल्क का नाम भी ज़रूर लिखें। बैग पर ऐसी कोई अलामत रखे के देखते ही अपने सामान को पहचान सकें, और घर से दुआ याद हो तो पढ़ कर निकलें।

”بِسْمِ اللَّهِ أَمِنْتُ بِاللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ“

याद न हो तो सिर्फ़

“بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ”

पढ़ लें सवारी का पहले से नज़म रखें और फ़्लाइट के वक़्त से तीन चार घन्टा पहले ही एयर पोर्ट पर पहुँच जाएं और एहराम अगर हो सके तो घर से ही बाँध कर निकले या एयर पोर्ट पर जा कर बाँधें, एयर पोर्ट पर पूरा इन्तेज़ाम रहता है, वहाँ पर हमारे दावत के साथी भी मुसतक़िल हाजियों की खिदमत में रहते हैं, वह पूरी रहबरी करते हैं, एहराम भी बाँधवाते हैं, अल्लाह उन को जज़ाए ख़ैर दे। फ़्लाइट के वक़्त से पहले आप को अन्दर ले लेंगे, आप के सामान की आप के सामने जाँच होगी और कसटम हो कर वह सामान उसी फ़्लाइट के लगेज में पहुँच जाएगा जिस फ़्लाइट में आप सवार होंगे।

एहराम का तरीक़ा और तरतीब

हज और उमरह में सब से पहला अमल एहराम है। हज या उमरह की निय्यत से तलबिया पढ़ने को एहराम कहते हैं (मजाज़न इन दो चादरों को भी एहराम कह देते हैं) एहराम बाँधने से पहले हजामत, ज़ेरे नाफ़ बाल, लबें और नाख़ुन तरश्वा कर फ़ारिग़ हो जाएं, एहराम से पहले गुस्ल मस्नून है, न हो सके तो वुजू ही कर लें।

एहराम में दो चादरें होती हैं, बगैर सिली हुई, एक चादर को तहे बन्द की तरह बाँध लें और दूसरी चादर को ओढ़ लें, यह एहराम बँध गया, मगर याद रखें अभी एहराम शुरू नहीं हुआ, एहराम शुरू होगा निय्यत करने से और तलबिया (लब्बैक कहने) से, एहराम बाँधने के बाद ऊपर की चादर से सर ढांक कर दो रकात नफ़ल नमाज़ पढ़ लें, अगर वक़्त मकरूह न हो और टोपी पहन कर भी पढ़ सकते हैं क्यों के अभी एहराम शुरू नहीं हुआ। इस के बाद आप को निय्यत और तलबिया पढ़ना है, तलबिया यानी

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ

الْحَمْدُ وَالنِّعْمَةُ لَكَ وَالْمُلْكُ لَا شَرِيكَ لَكَ “
(मुस्लिम)

चाहे तो फ़ौरन निय्यत कर के तलबिया कह लें या फ़्लाइट में सवार होने के बाद मीक़ात आने से पहले।

जहाज़ में मीक़ात आने से पहले कपतान की तरफ़ से हाजियों को इत्तेला दी जाती है, के अब आप मीक़ात के क़रीब पहुँच रहे हैं मगर आप इस का इन्तेज़ार न करें बल्के फ़्लाइट में सवार होते ही निय्यत कर लें और तीन मर्तबा ज़रा बुलन्द आवाज़ से लब्बैक पढ़ लें। जब आप ने निय्यत और

तलबिया कह लिया तो अब एहराम शुरू हो गया, अब आप पर एहराम की पाबन्दियाँ लग गई अब दो बातें आप को समझनी हैं। निय्यत कैसे करना ? और एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं ?

हज की तीन सूरतें

निय्यत को समझने से पहले यह बात समझ लें के हज तीन तरह का होता है.

पहला:- सिर्फ हज की निय्यत से एहराम बाँधना, इस को “हजे इफ़राद” कहत हैं।

दूसरा :- हज व उमरह का एक साथ एहराम बाँधना यानी एहराम बाँध कर हज और उमरह की एक साथ निय्यत करना इस को “हजे क़िरान” कहते हैं। इन दो सूरतों में एहराम की पाबन्दियाँ एहराम बाँधने से ले कर हज से फ़ारिग होने तक रहती है। यानी लम्बे वक़्त तक एहराम बाक़ी रहता है जो आम तौर पर मुश्किल होता है। और एक

तीसरी सूरत:- जो आसान है के एहराम बाँध कर उमरह की निय्यत कर लें, मक्का पहुँच कर उमरह कर के एहराम ख़तम, फिर ८ ज़िल हिज्जा से हज की निय्यत कर के एहराम बाँधें

और हज पूराकर के एहराम खतम । इस हज को “हजे तमत्तो” कहते हैं । यह आसान है और आवाम के लिये इस में सहूलत है । लिहाज़ा इस किताब में तमत्तो का तरीका तफ़सील से लिखा जा रहा है इसी के साथ इफ़राद और क़िरान की भी वज़ाहत है ।

हज की तीन क़िस्मों में फ़र्क

एक फ़र्क तो इन तीनों में निय्यत में है के इफ़राद में सिर्फ़ हज की निय्यत है । क़िरान में हज व उमरह दोनों की एक साथ निय्यत होती है और तमत्तो में एहराम बाँध कर पहले उमरह की निय्यत होती है ।

दूसरा बड़ा फ़र्क यह है के इफ़राद और क़िरान में एहराम शुरू से हज के खतम तक रहेगा और तमत्तो में उमरह कर के एहराम खुल जाएगा और ८ ज़िल हिज्जा तक हाजी बग़ैर एहराम के रहेगा फिर ८ को हज का एहराम बाँधेगा ।

एक तीसरा फ़र्क यह है के क़िरान और तमत्तो में कुर्बानी वाजिब है और इफ़राद में कुर्बानी वाजिब नहीं बल्के मुस्तहब है ।

तीनों में अफ़ज़ल क़िरान है मगर एहराम की पान्दियों से बचना मुश्किल होता है इस लिये अवाम को तमत्तो की राए

दी जाती है। तीनों क्रिस्मों में हज व उमरह के आमाल व अहकाम और एहराम के मसाइल यकसाँ हैं।

निय्यत कैसे करें

आप का हज “तमत्तो” है तो चुँके आप को मक्का जा कर पहले उमरह करना है इस लिये यह एहराम आप का उमरह का है तो आप निय्यत यूँ करें अरबी में कहें या उर्दू में या अपनी ज़बान में

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَا لِي وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي”

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं उमरह की निय्यत करता हूँ तू आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा।

जिन का इफ़राद है वह इस तरह निय्यत करें

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

और जिन का क़िरान है वह उमरह और हज की एक साथ निय्यत इस तरह करें

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ فَيَسِّرْهُمَا لِي وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّي”

जब निय्यत हो गई तो निय्यत के साथ ही थोड़ी बुलन्द आवाज़ से तीन मर्तबा लब्बैक पढ़ें और औरतें आहिस्ता पढ़ें।

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ
 الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ“

तर्जमा : हाज़िर हूँ ! ए अल्लाह हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ, सारी तारीफ़ें और सब नेमतें तेरी ही हैं, और मुल्क व बादशाहत तेरी ही हैं, तेरा कोई शरीक नहीं।

इस दुआ को तलबिया कहते हैं, यह हज व उमरह की खास दुआ है। इस को बार बार और हर मौके पर पढ़ना है। गौया हज में अफ़ज़ल ज़िक्र यही है।

तलबिया हज़रत इब्राहीम عليه السلام की पुकार का जवाब है, इब्राहीम عليه السلام ने अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के बन्दों को पुकारा था के आओ अल्लाह के दरबार पर हाज़री दो। पस जो बन्दे हज व उमरह में तलबिया पढ़ते हैं, तो गोया यूँ कहते हैं , ऐ अल्लाह तू ने अपने बन्दे हज़रत इब्राहीम عليه السلام से आवाज़ लगवा कर हम को बुलाया था तो हम हाज़िर हैं, हाज़िर हैं, तेरे सामने हाज़िर हैं।

एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं?

जब आप ने एहराम बाँध कर निय्यत कर ली और

तलबिया पढ़ लिया तो आप पर एहराम की पाबन्दियाँ लग गईं।

- १) अब आप सर और चेहरा नहीं ढाँक सकते, औरत सिर्फ़ चेहरा न ढाँके, यानी उस पर कपड़ा न लगाए, औरत के लिये सर को छुपाना ज़रूरी है।
- २) अब आप खुशबू नहीं लगा सकते, न सूँघ सकते हैं, यह हुक्म मर्द व औरत दोनों के लिये है।
- ३) अब आप अपने चेहरे, सर या बदन के किसी हिस्से का बाल नहीं तोड़ सकते, इसी तरह नाखुन नहीं काट सकते, यह हुक्म भी मर्द और औरत दोनों के लिये है।
- ४) अब आप सिला हुआ कपड़ा नहीं पहन सकते, जैसे कुर्ता, पाएजामा, कोट पतलून, बन्यान वगैरह यह हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये है।
- ५) अब आप न बीवी से सोहबत कर सकते हैं, ना मियाँ बीवी के तअल्लुक्रात वाली बातें कर सकते हैं, यह हुक्म भी मर्द और औरत दोनों के लिये है।
- ६) इसी तरह अब आप ऐसा जूता नहीं पहन सकते जो पाओं की उभरी हुई हड्डी को ढाँप दे। जूता बूट न पहनें,

सिलीपर जैसी चप्पल पहनें, यह हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये है।

- ७) अब आप हरम की घास, पौदा या दरख्त की टहनी नहीं तोड़ सकते, यह हुक्म मर्द व औरत दोनों के लिये है।
- ८) अब आप हरम में किसी भी जानवर का शिकार या शिकार की तरफ़ इशारा नहीं कर सकते। यहाँ तक के अपने बदन या सर की जूँ भी नहीं मार सकते। यह भी मर्द व औरत दोनों के लिये है तो गोया आठ पाबन्दियाँ मर्दों पर है और छः पाबन्दियाँ औरतों पर है। लिहाज़ा एहराम की हालत में इन पाबन्दियों का पुरा ख्याल रखें और एहराम की हालत में अपने आप को इबादत, नेकियों और अच्छी आदतों का पाबन्द बनाएं, उलमा ने लिखा है के एहराम की हालत में हाजी जो आदत इख्तियार करता है इस का असर मौत तक बाक़ी रहता है।

औरत का एहराम

याद रखो ! औरत का एहराम सिर्फ़ उस के चेहरे का खुला रखना है, औरत अपने सिले हुए कपड़ों में रहेगी। मोज़े, दस्ताने और ज़ेवरात भी पहन सकती है। हाँ चेहरा

खुला रखना ज़रूरी है, लेकिन ऐसा भी न हो के बे परदगी हो, परदा भी ज़रूरी है। लिहाज़ा सर पर केप नुमा नक्राब डाले के जिस से परदा भी हो जाए और कपड़ा भी मुँह पर न लगे, ऐसा नक्राब बाज़ार में मिल जाता है। औरत को सिर्फ़ चेहरा खुला रखना है, सर को ढाँकना ज़रूरी है, इस लिये बेहतर यह है के सर पर छोटा रुमाल बाँध दे ताके सर न खुले, लेकिन याद रखो! यह एहराम नहीं है, इस लिये वुजू में इस को मसह करते वक़्त खोलना ज़रूरी है।

अगर औरत नापाकी की हालत में हो तो इसी हालत में एहराम बाँधे और दो रकात एहराम की न पढ़े। फिर मक्का पहुँचने के बाद जब तक पाक न हो मस्जिदे हराम में न जाए। जब पाक हो जाए तो गुस्ल कर के मस्जिद में जाए, तवाफ़ व सई करे।

बहुत सारे लोग छोटे बच्चों को भी हज में ले जाते हैं, तो नाबालिग़ बच्चा अगर होशियार और समझदार है तो वह खुद एहराम बाँधे और तमाम अरकान व अफ़आल बालिग़ की तरह अदा करे। अगर ना समझ और छोटा है तो उस का सरपरस्त उस की तरफ़ से एहराम बाँधे और तमाम अरकान में इस की भी निय्यत कर ले।

मक्का की तरफ़ रवानगी और जिद्दा

हज और उमरह का पहला काम यानी एहराम आप ने बाँध दिया, अब आप को मक्का पहुँचने तक कोई खास काम नहीं करना है, बस एहराम की पाबन्दियों का ख्याल रखें और अल्लाह के ध्यान व तवज्जा के साथ, शौक्र व मुहब्बत से लम्बैक पढ़ते रहें, यह तक़रीबन पाँच घन्टे का सफ़र है। इस के बाद आप जिद्दा उतरेंगे कुछ घन्टे वहाँ आप की पास्पोर्ट, कस्टम वगैरह की कारवाइयाँ होंगी वहीं पर आप को मुअल्लिम का नाम नम्बर कार्ड और मक्का में बिल्डिंग/हॉटल और कमरे का नम्बर दिया जाएगा। वहाँ ज़रा होशियार रह कर किसी से पुछ ताछ कर सारी कारवाई करवा लें, इस के बाद कस्टम शेड से अपने सामान को पहचान कर एक तरफ़ कर लें, फिर वहाँ के कारकुन वह सामान उस बस में रखेंगे जिस बस में आप सवार हो कर मक्का पहुँचेंगे। जिद्दा उतर कर आप के दिल की अजीब कैफ़ियत होगी, खुशी होगी और होनी ही चाहिये के अब आप बहुत करीब आ गए। जिद्दा से मक्का मुकर्रमा का रास्ता सिर्फ़ देढ दो घन्टे का है।

जिद्दा से मक्का मुअज़्ज़मा

जिद्दा से बस में सवार हो कर जब आप रवाना होंगे तो

मक्का आने से बीस किलो मीटर पहले वह जगह आती है जहाँ से हरम की हद शुरू हो जाती है।

इसी के करीब हुदैबिया का वह मक़ाम भी है जहाँ हुज़ूर ﷺ को कुफ़ारे मक्का ने उमरह करने से रोक दिया था, और एक दरख्त के नीचे आप ﷺ ने सहाबा से मौत पर बैअत ली थी। जिस को बैअते रिज़वान कहते हैं। कुर्आन में भी इस का ज़िक्र है। यहाँ से हरम की हद शुरू हो जाती है। इस जगह एक मस्जिद भी बनी हुई है। सड़क के किनारे पर बड़े हुरूफ़ में लिखा भी है। “هَذَا حَدُّ الْحَرَمِ” यह हरम पाक की हद है। मगर यह हुदैबिया वाली जगह जिद्दा से मक्का मुअज़्ज़मा आने वाली पुरानी सड़क पर है इस के करीब नई सड़क बनी हुई है। वहाँ पर हरम की हद बताने के लिये सड़क पर रहल की शकल बनी हुई है आम तौर पर बसें और गाड़ियाँ नई सड़क से मक्का आती हैं, बहर हाल जब यह जगह आए तो ख़ूब शौक़ व मुहब्बत और ख़ौफ़ व अदब की कैफ़ियत के साथ गुज़रें और अल्लाह से दुआ करें के ऐ अल्लाह यह तेरा और तेरे रसूल ﷺ का हरम है, इस में जान्वरों को भी अमन है तू इस की बरकत और हु्रमत से मेरे गोशत, पोशत और सारे जिस्म पर जहन्नम की आग हुराम कर

दे और क़यामत के अज़ाब से मुझे अमन देदे अगर अरबी में याद हो तो अरबी में कहें

”اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا حَرْمُكَ وَحَرْمُ رَسُولِكَ فَحَرِّمْ

لَحْيِي وَدَمِي وَعَظْمِي وَبَشْرِي عَلَى النَّارِ اللَّهُمَّ آمِنِّي

(काज़ी खान १, ३१०) “عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ”

हुदूदे कुचए महबुब हैं वहीं से शुरू

जहाँ से पड़ने लगे पाओं डगमगाए हुए

मक्का मुअज़ज़मा में दाखला

थोड़ी देर के बाद आप को मक्का की खूबसूरत इमारतें नज़र आने लगेंगी, अब आप इस मुक़द्दस शहर में दाखिल हो गए, जहाँ का चप्पा चप्पा आप को इस्लाम की तस्वीर और हुज़ुर ﷺ और सहाबा की कुरबानियों से मुनव्वर नज़र आएगा।

निहायत आजिज़ी के साथ इस्तिफ़ार के साथ लब्बैक कहते हुए दाखिल हों, ख़ौफ़ और अदब के साथ अल्लाह से दुआ करें के ऐ अल्लाह मुझे इस पाक और मुबारक शहर में सुकून व इतमेनान से रहना नसीब फ़रमा। यहाँ के हुकूक और आदाब की तौफ़ीक़ दे। और हलाल रोज़ी अता फ़रमा।

मुअल्लिम की बस आप को आप की बिल्डिंग तक ले जा कर छोड़ देगी, इस के बाद आप अपनी रिहाइश को देख लें, अपना सामान वगैरह तरतीब से रख कर अपनी ज़रूरियात से फ़ारिग हो जाएं, और चूँके आप पर थकन होगी तो थोड़ा आराम कर के फिर मस्जिदे हराम की तरफ़ जाएं, इस मौके पर हाजी बहुत जल्द बाज़ी करते हैं, थके हारे फ़ौरन ही हरम में भागते हैं, आप लोगों की देखा देखी बिल्कुल न करें, बल्के आराम कर के हश्शाश बश्शाश हो कर हरम में जाएं।

यह बात ध्यान में रखें के मक्का में पहुँचते ही मुअल्लिम की तरफ़ से जो पीला पटका मिलेगा उस को अखीर तक हाथ पर बाँधे रखें और जो कार्ड मिलेगा उस को संभाल कर रखें यही आप का पासपोर्ट और पता है।

बैतुल्लाह पर हाज़री

अपने कमरे से बावुजू हो कर मस्जिदे हराम की तरफ़ चलें। किसी भी दरवाज़े से खुशू व खुजू से दाखिल हों, दाखिल होते वक़्त ‘

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ
कह कर दायाँ पाँव अन्दर रखें और यह दुआ पढ़ें

”اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَاَفْتَحْ لِي اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ“ (तिर्मिज़ी १/१७)

दाखले के वक़्त खाना—ए— काबा पर जब निगाह पड़ती है तो उस वक़्त की दुआ अल्लाह पाक क़बूल फ़रमाते हैं। बेहतर यह है के सब से पहले दुआ यह कर ले के ऐ अल्लाह मौत तक मेरी तमाम जाइज़ दुआओं को जो मेरे हक़ में बेहतर हों और जो तुझे पसन्द हों क़बुल फ़रमा। या यूँ कहें ऐ अल्लाह मुझे मुस्तजाबुद्दावात बना दे।

”اللَّهُ اَكْبَرُ لَا اِلَهَ اِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اَكْبَرُ“

कह कर हाथ उठा कर ख़ूब दुआएं करें, जितनी देर दुआ कर सकते हैं और जो दुआएं कर सकते हैं, इन्शाअल्लाह उस वक़्त की सारी दुआएं आप की क़बुल हैं, अगर याद हो तो यह दुआ भी शामिल कर लें।

”اللَّهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هَذَا تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا
وَمُهَابَةً وَزِدْ مَنْ شَرَفَهُ وَكَرَّمَهُ مِنْ حَجَّةٍ أَوْ اعْتَمَرَهُ
تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَبِرًّا، اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ
السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ، أَعُوذُ بِرَبِّ الْبَيْتِ

مِنَ الدِّينِ وَالْفَقْرِ وَمِنْ ضَيْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ

القَبْرِ“
(काज़ी खान)

ऐ अल्लाह अपने मुक़द्दस घर की इज़्ज़त व अज़मत, शराफ़त व हैबत में तरक्की फ़रमा और हज व उमरह करने वालों में जो इस की ताज़ीम व तकरीम करें उन को भी शराफ़त व अज़मत और नेकी अता फ़रमा, ऐ अल्लाह तेरा ही नाम सलाम है, और सलामती तेरी ही तरफ़ से है, तू हम पर सलामती भेज, मैं इस मुक़द्दस घर के रब की पनाह लेता हूँ कर्ज़े से और मोहताजी से और सीने की तंगी से और क़बर के अज़ाब से।

उमरह और उस का तरीका

अब आप को उमरह करना है, उमरह बहुत आसान है, उमरह में आप को सिर्फ़ चार काम करने हैं। इस को ज़हन में बिठा लो।

- १) पहला काम : निय्यत और लब्बैक के साथ एहराम बाँधना, एहराम तो आप का बंधा हुआ है।
- २) दूसरा काम : बैतुल्लाह का तवाफ़ करना, रमल और इज़्ज़ितबा के साथ, तवाफ़ कहते हैं बैतुल्लाह के गिर्द सात

चक्कर लगाने को ।

रमल कहते हैं काँधो को हिलाते हुए क़रीब क़रीब क़दम रख कर ज़रा अकड़ कर चलना, रमल तवाफ़ के पहले तीन चक्करोँ में होता है ।

इज़्तिबा : कहते हैं एहराम की ऊपर वाली चादर को दाहनी बग़ल के नीचे से निकाल कर बाएं कँधे पर डालना, इज़्तिबा सातों चक्कर में होता है ।

३) तीसरा काम : सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई करना ।

४) चौथा काम : हजामत बनवाना, यानी सर के बाल मुन्डवाना या कतरवाना । बस यह चार काम कर दिये तो आप का उमरह हो गया अब अच्छी तरह समझें तवाफ़ कैसे करना ?

तवाफ़ का तरीक़ा

बैतुल्लाह के चार कोने हैं, एक कोने पर हज़्रे अस्वद है, और जब हज़्रे अस्वद की तरफ़ रुख करेंगे तो दाहनी तरफ़ रुकने इराक़ी है और बाएं तरफ़ रुकने यमानी है, रुकने इराक़ी के बाद वाले कोने को रुकने शामी कहते हैं ।

जब तवाफ़ शुरू करें तो आप हज़्रे अस्वद पर आएँ, उस वक़्त एहराम में इज़्तिबा कर लें, यानी दाहनी तरफ़ बग़ल से

चादर निकाल कर बाएँ कंधे पर डाल लें, हज़रे अस्वद के सामने इस तरह खड़े हों के काबा की तरफ़ रुख़ हो और पूरा हज़रे अस्वद दाहनी तरफ़ हो, फिर तवाफ़ की निय्यत करें,

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الطَّوَّافَ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

ऐ अल्लाह मैं तवाफ़ की निय्यत करता हूँ तू इस को आसान फ़रमा और इस को क़बूल फ़रमा, निय्यत कर के दाहनी तरफ़ इतना हटे के हज़रे अस्वद बिल्कुल सामने आजाए, फिर जैसे नमाज़ में हाथ उठाते हैं, इस तरह हाथ उठा कर यह दुआ पढ़ें

“بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَبِاللَّهِ الْحَمْدُ”

फ़िर दोनों हाथ हज़रे अस्वद पर इस तरह रखें जैसे सज्दे में रखे जाते हैं। और दोनों हथेलियों के बीच में सर रख कर हज़रे अस्वद को अदब के साथ बोसा दें, भीड़ की वजह से अगर हज़रे अस्वद को बोसा देना मुश्किल हो तो सिर्फ़ हाथ लगा कर हाथ को बोसा दें, लेकिन आज कल यह भी मुश्किल है। हज़रे अस्वद के पास पहुँचना ही मुश्किल है। तो इस सूरत में दूर से हज़रे अस्वद के सामने हो जाएं, हज़रे अस्वद के सामने एक लकीर खींची हुई है, लेकिन यह लकीर भी अब तो ख़तम कर दी। इस लिये बेहतर यह है के हज़रे अस्वद के

सामने होने के लिये उस लाइट को देखें जो हज़्रे अस्वद की सीध में ऊपर लगी हुई है। फिर अपनी जगह खड़े खड़े दुआ पढ़ कर अपनी हथेलियों से हज़्रे अस्वद की तरफ़ इशारा करें, यह ख्याल कर के के हथेलियाँ हज़्रे अस्वद पर है। फिर हथेलियों को बोसा दें, फिर दाहनी तरफ़ बैतुल्लाह का तवाफ़ शुरू करें और तवाफ़ का एक चक्कर पूरा कर के जब हज़्रे अस्वद के पास आजाएँ तो फिर हज़्रे अस्वद का इस्तेलाम करें यानी दुआ पढ़ कर हाथ से इशारा कर के हथेलियों को बोसा दें तो आप का एक चक्कर और दो बोसे हुए, इस तरह सात चक्कर पूरे करें। तो सात चक्कर होंगे और आठ बोसे, आप का तवाफ़ हो गया।

पहला और आखरी इस्तेलाम यानी बोसा बहुत एहतेमाम से करें, यह बहुत मुवक्कद है, यह बात भी याद रखें के तवाफ़ के दौरान सीना या पीठ बैतुल्लाह की तरफ़ न करें इस से तवाफ़ फ़ासिद हो जाता है इस को दोबारा करना पड़ेगा, हाँ हज़्रे अस्वद के बोसा के वक़्त सीना और पीठ और चेहरा हज़्रे अस्वद की तरफ़ करना मना नहीं है, बल्के मस्नून है, नीज़ तवाफ़ के दौरान अपने सामने की तरफ़ देखता रहे, इधर उधर देखना मकरूह और ख़िलाफ़े अदब है, तवाफ़ के दौरान बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करना मकरूहे तहरीमी है,

इसी तरह आप देखेंगे के बहुत सारे लोग रुकने यमानी को भी बोसा देते हैं और दूर से छूते हैं, इस में मसअला यह है के जब आप रुकने यमानी पर पहुँचें तो उस को दोनों हाथ या सिर्फ़ दाएं हाथ से छू लेना सुन्नत है, इस को बोसा न दें, यह सुन्नत नहीं है बल्के हाथ लगाना सुन्नत है, वह भी क़रीब से, अगर आप दूर हैं तो इशारे से छूना भी नहीं है।

(इज़ाहु त्ताहावी / बदाअु स्सनाए)

यह बात ज़हन में रखें के आप जो लब्बैक पढ़ते रहते थे वह उमरह का तवाफ़ होते ही बन्द कर दें, अब न पढ़ें। यह बात भी याद रखें के इज़्तिबा यानी दाहनी बग़ल से चादर निकाल कर बाएँ काँधे पर रखना यह सातों चक्कर में होगा और रमल यानी अकड़ कर चलना पहले तीन चक्करों में होगा।

तवाफ़ के दौरान दुआएँ पढ़ते रहें जो याद हों, अगर कुछ याद न हों तो “सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इलल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर” पढ़ते रहें।

नोट : तवाफ़ के सातों चक्करों की दुआएँ और इसी तरह मौक़े महल की दुआएँ किताब के अख़ीर में लिखी जा रही हैं हो सके तो उन को भी याद कर लें।

तवाफ़ के दौरान सलाम व कलाम

तवाफ़ के दौरान अगर किसी दोस्त से मुलाक़ात हो जाए

तो उस से सलाम व मुसाफ़ा कर सकते हैं, और ज़रूरत के बक़द़ बात भी कर सकते हैं, इसी तरह मसअ़ला मसाइल पूछ सकते हैं, अपनी बात भी कर सकते हैं, लेकिन बात चीत के दौरान सामने निगाह रखनी चाहिये, इधर उधर मुड़ना मना है, बहुत ज़्यादा बे ज़रूरत बात चीत करना मकरूह है।

(इज़ाहुल मनासिक/शैबता)

तवाफ़ के बाद की दो रकात

तवाफ़ के बाद आप मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ आँ, अगर याद हो तो यह आयत पढ़ें,

{ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى }

अगर मक़ामे इब्राहीम के पीछे सहूलत से जगह मिल जाए तो ठीक है, वरना जहाँ जगह मिले दो रकात तवाफ़ की पढ़ें। नमाज़ पढते वक्त जो इज़्तिबा था यानी बगल खुला था इस को डांक दें, हर तवाफ़ के ख़त्म पर दो रकात वाजिब है, चाहे नफ़ली तवाफ़ हो, नमाज़ पढ़ कर ख़ूब गिड़ गिड़ा कर अल्लाह से दुआँ करें, इस के बाद अगर सहूलत हो तो मुलतज़म पर आँ, हज़्रे अस्वद और काबा के दरवाज़े के

बीच में ढाई गज के करीब बैतुल्लाह की दीवार का जो हिस्सा है उस को मुलतज्जम कहते हैं, यह दुआ की क़बूलियत की खास जगह है, इस से रसूलुल्लाह ﷺ इस तरह लिपट जाते थे जिस तरह बच्चा माँ के सीने से लिपट जाता है, अगर मौक़ा मिले तो लिपट जाएं, सीना इस से लगाएं, कभी दाहना कभी बायां रुख़सार उस पर रखें और ख़ूब रो रो कर दुआ करें। मगर इस तरह जाने की कोशिश हरगिज़ न करें के दूसरों को तक्लीफ़ पहुँचे या ख़ुद के लिये ख़तरा हो जाए। हर अमल में इस का ख़्याल रखें। इस के बाद ज़मज़म पर आएँ, अब तो वह कुँवा नहीं है, जगह जगह पर नल लगे हुए हैं, बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के पेट भर कर ज़मज़म का पानी पियें। शुरू में बिस्मिल्लाह और अख़ीर में अलहम्दुलिल्लाह पढ़ें और यह दुआ पढ़ें।

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا

وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ“

ऐ अल्लाह मुझे इल्मे नाफ़े अता फ़रमा, वुस्अत वाली रोज़ी अता फ़रमा और हर बीमारी से शिफ़ा दे।

जमज़म का पानी बैठ कर पीयें या खड़े हो कर?

आम तौर पर लोग खड़े हो कर ही पीते हैं बल्के खड़े होने का एहतेमाम करते हैं और इस को सुन्नत समझते हैं, तो इस सिलसिले में मसअ्ला जानना चाहिये के ज़मज़म का पानी भी बैठ कर पीना सुन्नत है, अलबत्ता खड़े हो कर भी पी सकते हैं, जाइज़ है।

उमरह का तीसरा काम

आप को उमरह में चार काम करने थे, दो काम आप ने कर लिये, एहराम और तवाफ़।

अब तीसरा काम है सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई करना यानी सफ़ा पहाड़ से मरवा पहाड़ी तक और मरवा से सफ़ा तक चलना।

जिस तरह तवाफ़ शुरू करने से पहले आप ने हज़्रे अस्वद का इस्तेलाम किया था या हाथ से इशारा कर के हथेलियों को बोसा दिया था इसी तरह बोसा दे कर सफ़ा पहाड़ी पर आएँ, ये बोसा देना न भूलें, यह सुन्नत है, सफ़ा पर चढ़ कर सई की निय्यत करें, ”اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ“

”بِسَبْعَةِ أَشْوَاطٍ لِلَّهِ تَعَالَى فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي“

ऐ अल्लाह मैं सफ़ा मरवा की सई की निय्यत करता हूँ सात चक्करोँ के साथ तु इस को आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा ।

हुज़ूर ﷺ की इत्तेबा में बेहतर है के आप भी कहें

”أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ

مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ“

फ़िर सफ़ा पर चढ़ कर बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ कर के दोनों हाथ उठा कर अल्लाह से दुआ करें । यह जगह भी दुआ के क़बूलियत की है । इस के बाद नीचे उतर कर मरवा की तरफ़ चलें, सई के दर्मियान चौथा कलिमा, तीसरा कलिमा और यह दुआ पढ़ते रहें

”رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ

إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ“

ऐ पर्वरदिगार बरूश दे और रहम फ़रमा और हमारी जो ग़लतियां तेरे इल्म में हैं उन से दरगुज़र फ़रमा, तू बहुत ग़ालिब और बड़ा ताक़तवर है, और बड़ा करीम है ।

सफ़ा से कुछ दूर चल कर दो हरे सुतून नज़र आएँगे, इन को

मिलैन अरुज़रैन कहते हैं, वहाँ से ज़रा दौड़ कर चलें, इस के बाद दो हरे सुतून और नज़र आएँगे वहाँ पहुँच कर दौड़ना बन्द कर दें अपनी रफ़्तार चलें, यह हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये है, औरतें अपनी रफ़्तार चलें, मरवा पर हुँच कर भी बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ कर के यहाँ भी दोनों हाथों को उठा कर ख़ूब दुआँ करें, जैसे सफ़ा पर की थीं, यह भी क़बूलियत की जगह है, यह आप का एक फेरा हुआ, फ़िर मरवा से सफ़ा पर जाएँगे तो दूसरा फेरा होगा, इस तरह सात फेरे पूरे करें, सातवाँ फेरा मरवा पर ख़तम होगा, हर फेरे में सफ़ा और मरवा पर इसी तरह दुआ करते रहें और हर फेरे में दो हरे सुतून के बीच में दौड़ते हुए चलें, हर फेरे में ज़िक्र व दुआ करते रहें, ख़ामोश न रहें।

उमरह का चौथा काम

अब तीसरा काम सई भी हो गया, इस के बाद वहीं बाबे मरवा पर हज्जाम मौजूद आप का इन्तेज़ार कर रहे होंगे, इन से अपने सर के बाल मुन्डवा दीजिये, चौथा काम भी हो गया, अब आप का उमरह पूरा हो गया, एहराम की सारी पाबन्दियां अब ख़तम हो गईं। अपने घर पर जाएँ, नहा धो

कर अपने कपड़े पहन लें, खुशबू और अतर लगाएँ, अब आप के लिये वह सब चीज़ें जाइज़ हो गईं जो एहराम की वजह से मना थीं।

औरतों के लिये सर मुन्डाना नहीं है, बल्के थोड़े बाल काटना है यानी अपनी चोटी के निचले हिस्से से एक पोर के बराबर बाल काटे, तक्ररीबन देढ़ इन्च, अब औरतों पर से भी एहराम की पाबन्दियां खतम हो गईं।

हलक़ और क़स्र की मुख्तलिफ़ सूरतें

हलक़ यानी सर के बाल उसतरे से साफ़ करना और क़स्र यानी सर के बाल कतरवाना एहराम खोलने के लिये हलक़ या क़स्र ज़रूरी है, इस का मस्नून तरीका यह है के पूरे सर के बाल मुन्डवा दिये जाएं, या पूरे सर के बाल बराबर कर के कटवा दिये जाएं, हलक़ करना क़स्र से ज़्यादा बेहतर है, इस का सवाब ज़्यादा है, आप हरम में देखेंगे के लोग मुख्तलिफ़ तरह से हलक़ और क़सर करते हैं, आप देखा देखी न करें, मसअ़ला अच्छी तरह समझ लें। इस की कई सूरतें हैं।

१) सर के बाल अगर बड़े हैं तो आप क़स्र कर सकते हैं, यानी बाल क़ैन्ची से कटवा सकते हैं, मगर लम्बाई में

कम अज़ कम उंगली के पोरवे के बराबर कटाना वाजिब है, अगर आप के सर के बाल उंगली के पोरवे से छोटे हैं, तो फिर हलक़ करना वाजिब है, क़ैन्ची से काटने से एहराम नहीं खुलेगा। (अहसनुल फ़तावा)

२) दूसरी सूरत यह है के पूरे सर के चार हिस्सा कर के एक हिस्से के बराबर या उस से ज़्यादा कटवाया जाए तो ऐसी सूरत में एहराम तो खुल जाएगा मगर मकरूह तहरीमी का गुनाह होगा। (गुन्यतुल्मनासिक)

मगर इस में भी ज़रूरी है के बाल लम्बाई में उंगली के पुरवे के बराबर कटाए जाएं।

३) तीसरी सूरत सर के चौथाई हिस्से से कम बाल कटवाए जाएं, तो ऐसी सूरत में इमाम अबू हनीफ़ा رحمته الله عليه के नज़्दीक इस का एहराम नहीं खुलेगा, वह शरूख़ एहराम में ही समझा जाएगा, अब एहराम के ख़िलाफ़ काम करने से उस पर जुरमाना वाजिब होता रहेगा।

(अहसनुल फ़तावा / फ़तावा रहीमिया)

४) चौथी सूरत सर के बाल उगे ही नहीं है, बल्के गन्जा है, या पाँच सात घन्टा पहले उमरह कर के हलक़ कर दिया

है, अब फिर दोबारा उमरह कर रहा है तो ऐसी सूरत में पूरे सर पर उस्तरा फ़ेरना वाजिब है। (शामी/फ़तहुल क़दीर) लिहाज़ा आप अगर क़स्र करते हैं तो एक उंगली के पोरवे के बराबर बाल पूरे सर से बराबर काटें, और अगर सर पर बाल उंगली के पोरवे से छोटे हैं तो पूरे सर का हलक़ करवा लें।

उमरह के बाद से अय्यामे हज तक

उमरह से फ़ारिग़ हो कर आप ८ ज़िल हिज्जा तक मक्का मुअज़्ज़मा में बग़ैर एहराम के रहेंगे, अब आप पर कोई पाबन्दी नहीं है। इन दिनों में अपने औक्रात को ख़ूब ग़नीमत समझें, फुज़ूल कामों में इधर उधर की मज्लिसों में, ख़रीद व फ़रोख़्त और शॉपिंग में क़ीमती वक़्त ज़ाए न करें, पाँचों नमाज़ों को बाजामत हरम में पढ़ने का एहतेमाम करें, ज़िक्र व तिलावत, नफ़ल नमाज़ें और इबादत के लिये इस से बेहतर जगह कौन सी हो सकती है? अगर कुछ नहीं कर सकते तो हरम में बैठ कर बैतुल्लाह को सिर्फ़ देखते ही रहें, रोज़ाना बैतुल्लाह पर एक सौ बीस रहमतें नाज़िल होती हैं, साठ तवाफ़ करने वालों पर, चालीस नमाज़ पढ़ने वालों पर और

बीस रहमतेँ बैतुल्लाह को देखने वालों पर उतरती हैं, इन दिनों में आप तवाफ़ की ख़ूब कसरत करें। क्यों के तवाफ़ ऐसी इबादत है जो हर जगह मयस्सर नहीं आ सकती। फिर क्या पता आइन्दा यहाँ हाज़री और तवाफ़ की सआदत मुक़द्दर है या नहीं। इस लिये एक एक लम्हे की, एक एक मिनट की ख़ूब क़द्र करें, नफ़ली तवाफ़ अपने लिये भी करें, अपने मरहूमिन के लिये भी करें, इसी तरह आप नफ़ली उमरह भी कर सकते हैं। इस की शक़्ल यह होगी के आप मक्का से बाहर जा कर एहराम बाँध कर आवें, मक्का के चारों तरफ़ हरम की हद है और निशानात लगे हुए हैं। मदीना की तरफ़ तर्न्ईम हरम की हद है। तर्न्ईम मक्का से तीन मील पर है। हुज़ूर ﷺ ने हज़रत आइशा رضي الله عنها को उन के भाई अब्दुरहमान के साथ उमरह करने के लिये भेजा था तो वह तर्न्ईम पर आई और यहाँ से एहराम बाँध कर उमरह किया। मक्का वाले आम तौर से यहीं से एहराम बाँधते हैं। यहाँ हज़रत आइशा رضي الله عنها के नाम से मस्जिदे आइशा भी बनी हुई है।

इसी तरह मक्का से ताइफ़ की तरफ़ नौ मील की मसाफ़त पर एक मक्काम है, जुअराना, यह भी हरम की हद है। हुज़ूर

ﷺ ने ताइफ़ की तरफ़ से आते हुए यहाँ से एहराम बाँध कर उमरह किया था। हरम से बाहर मक्का में दोनों जगह के लिये आसानी से सवारियाँ मिल जाती हैं, तर्न्ईम से एहराम बाँध कर उमरह करें तो इस को उर्फ़े आम में छोटा उमरह कहते हैं। और जिअराना से एहराम बाँध कर उमरह करें तो इसे बड़ा उमरह कहते हैं। (क्यों की दूर की मसाफ़त पर जा कर एहराम बाँधा है।)

बाज़ लोग बार बार तर्न्ईम जा कर एहराम बाँधते हैं, कभी रोज़ाना और कभी एक दिन में एक से ज़्यादा उमरे कर लेते हैं, कसरत से उमरह करना मम्नूअ तो नहीं बल्के मुस्तहब है, लेकिन कसरत से तवाफ़ करना कसरत से उमरह करने से अफ़ज़ल है, इस लिये कसरत से तवाफ़ करें।

बाज़ लोग हज व उमरह की सई के अलावा सफ़ा व मरवा की सई करते हैं इस में सवाब समझते हैं, यह ग़लत है, इस में कोई सवाब नहीं, नफ़ली सई शरअन साबित नहीं, बिला फ़ाइदा जान को थकाना है हाँ नफ़ली तवाफ़ साबित है, तवाफ़ कसरत से करें। इस के अलावा दुआओं का ख़ूब एहतेमाम करें। पूरी उम्मत के लिये अल्लाह तआला से

हिदायत और मसाइल का हल माँगें और अल्लाह को मनवाएं। बड़ी ऊँची जगह पर आप पहुँचे हैं, खूब अदब से गिड गिडा कर अल्लाह से माँगने का एहतेमाम करें। आप इन्शाअल्लाह नामुराद नहीं होंगे।

मिन्नत से समाजत से अदब से माँगो
दरे करीम से साइल को क्या नहीं मिलता

मक्का में नमाज़ कैसी पढ़ें? क़स्र या पूरी

मक्का में बाज़ लोग हज से पहले मदीना मुनव्वरा जाते हैं और बाज़ हज के बाद, तो गोया बाज़ को हज से पहले मक्का में ज़्यादा रहने का मौक़ा मिलता है और बाज़ को हज के बाद, अब अगर मक्का में आप का पन्द्रा रोज़ या इस से ज़्यादा क़याम हो रहा है तो आप मुक़ीम होंगे आप नमाज़ पूरी पढ़ेंगे। अगर पन्द्रा रोज़ से कम क़याम हो रहा है तो आप मुसाफ़िर रहेंगे यानी आप क़स्र करेंगे।

नोट : मिना व मुज़्दलिफ़ा मक्का की हुदूद में दाख़िल हो गए हैं। लिहाज़ा पन्द्रा दिन शुमार करने में मिना व मुज़्दलिफ़ा भी शामिल है, इस तरह अगर पन्द्रा दिन बनते हैं तो आप मुक़ीम हैं आप को चार रकात पढ़नी है, मक्का में भी, मिना व

मुज्दलिफ़ा और अरफ़ात में भी, अगर पन्द्रा दिन से कम है तो आप को क़स्र करनी है, मक्का में भी मिना व मुज्दलिफ़ा और अरफ़ात में भी।

मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने में ख़ूब ध्यान रखें के कोई औरत आप के दाएँ बाएँ न खड़ी हो जाए, क्यों के वहाँ औरतों का बहुत इख़्तिलात होता है। एक औरत की वजह से तीन मर्दों की नमाज़ ख़राब हो जाती है, औरत के दाएँ तरफ़ वाले की, बाएँ तरफ़ वाले की, औरत के पीछे पढ़ने वाले की, इन तीनों की नमाज़ ख़राब हो जाती है। हज के मौक़े पर खास तौर पर मस्जिदे हराम में बहुत ख़्याल रखें, मज्मे की भीड़ की वजह से अगरचे यह एहतियात बहुत मुश्किल होती है, मगर इतना तो ज़रूर ख़्याल रखें के अपने अगली सफ़ में कोई औरत न हो, और दाएं बाएं लग कर भी कोई औरत न खड़ी हो, अगर आप से अगली सफ़ में या दाएँ बाएँ कोई औरत आकर खड़ी हो जाए तो आप आगे बढ़ जाएं, अलबत्ता मस्जिदे नब्वी में औरतों का बिल्कुल अलग इन्तेज़ाम है। मस्जिदे हराम में तवाफ़ की वजह से अलग इन्तेज़ाम हुकूमत के लिये मुश्किल है।

हज के पाँच दिन

आठ ज़िल हिज्जा से हज का वक़्त शुरू हो जाता है। ८, ९, १०, ११ और १२ ज़िल हिज्जा, इन पाँच दिनों में कुछ आमाल व अरकान आप को करने हैं इसी को हज कहते हैं, आठ ज़िल हिज्जा से पहले यानी सात ज़िल हिज्जा को इशा के बाद से ही तय्यारी कर लें, चुंके हाजी ज़्यादा होते हैं, तो मुअल्लिम हज़रात इशा के बाद से ही हाजियों को मिना ले जाना शुरू कर देते हैं, लिहाज़ा तमाम ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो कर गुस्ल कर लें और एहराम बाँधें। जैसे पहले एहराम बाँधा था, एक चादर का तहबन्द बना लें और एक चादर औढ़ लें और जैसे पहले सर ढाँक कर दो रकात नमाज़ पढ़ी थी अब भी पढ़ लें, सलाम फ़ेर कर चादर सर से हटा कर हज की निय्यत कर लें, चाहे तो ८ तारीख़ को निय्यत करें, निय्यत इस तरह करें

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

ऐ अल्लाह मैं हज की निय्यत करता हूँ तू इस को मेरे लिये आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा। निय्यत के साथ ही तीन मरतबा ज़रा बुलन्द आवाज़ से तलबिया पढ़ें

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ
 الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ“

और औरतें आहिस्ता तलबिया पढ़ें, अब आप का एहराम शुरू हो गया, वह सारी पाबन्दियां लग गईं जो पहले बयान की गई थीं। (और जिन का हज इफ़राद या क़िरान है उन का एहराम तो पहले से बँधा हुआ है) अब आप दस्वीं या ग्यारहवीं तारीख को कुरबानी कर के सर के बाल मुन्डवाएंगे तब आप का एहराम खत्म होगा। अब आप को पहले की तरह हर मौक़े पर चलते फिरते, उठते बैठते ख़ूब शौक़ के साथ और अल्लाह की अज़मत व मुहब्बत के साथ लब्बैक पढ़ते रहना है और यह ख्याल कर के पढ़ना है के मैं हज़रत इब्राहीम عليه السلام की पुकार का अल्लाह को जवाब दे रहा हूँ, और अल्लाह मेरी बात सुन रहा है।

हज का पहला दिन ८ ज़िल हिज्जा

अब आप मिना पहुँच गए, आठ तारीख को ज़ोहर से पहले तक़रीबन तमाम हाजी मिना पहुँच जाते हैं। वहाँ पहले से खेमे (टेन्ट) लगे होते हैं। मुअल्लिम की बस आप को अपने खेमों में पहुँचा देगी। और यह ख्याल रखें के बजाए

पराइवेट सवारियों के मुअल्लिम की बस से ही सफ़र करें। पैदल भी सफ़र न करें वरना आप अपने खेमों की तलाश में भटक जाएंगे, इस का भी खयाल रखें के सामान बहुत थोड़ा और ज़रूरत का ले कर जाएँ, मसलन एक जोड़ा एहराम की चादरें, हवा का तकिया, लुंगी, पलास्टिक का मुसल्ला, चटाई, परदा करने के लिये चादर, बिरेड, सत्तू, फुरूट, फ़रसान, लोटा, साबुन, कन्करी की थैली, चप्पल रखने की थैली वगैरह। मिना में जाने से पहले मुअल्लिम की बस का नम्बर और मिना में आप का खेमा कहाँ हैं पहचान कर लें, और अपना तआरुफ़ी कार्ड हर वक़्त साथ रखें, अपने खेमों में पहुँच कर इस बात का पूरा ध्यान रखें के बे परदगी बिल्कुल न हो, इस लिये बीच में परदा डाल कर मस्तूरात को एक तरफ़ कर दें, और मर्द एक तरफ़ हो जाएँ।

मिना मक्का मुकर्रमा से तीन मील के फ़ासले पर दो तरफ़ा पहाड़ों के दर्मियान बहुत बड़ा मैदान है, मिना में आज आप को पाँच नमाज़ें पढ़नी है। ज़ोहर, असर, मग़िब इशा और ९ ज़िल हिज्जा की फ़ज़्र, यह पाँच नमाज़ें अपने खेमों में वा जमात अदा करें, बस और कोई काम आज मिना में नहीं

है, बाक़ी वक़्त ज़िक्र व तिलावत , तस्बीह व दुआ और अल्लाह की याद में गुज़ारें।

हज का दूसरा दिन ९ ज़िल हिज्जा

आज हज का दूसरा दिन है। आज से अय्यामे तशरीक़ भी शुरू हो गए, लिहाज़ा फ़ज़्र की नमाज़ के बाद फ़ौरन मर्द बुलन्द आवाज़ से और औरतें आहिस्ता से तक्बीरे तशरीक़ पढ़ें। तक्बीरे तशरीक़ ९ ज़िल हिज्जा की फ़ज़्र से १३ ज़िल हिज्जा की असर तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक मर्तबा पढ़ना वाजिब है। तक्बीरे तशरीक़ यह है।

”اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ“

“ أَكْبَرُ وَ لِلَّهِ الْحَمْدُ “

९ ज़िल हिज्जा का दिन बड़ा ही अज़ीमुश्शान दिन है। आज आप को सूरज निकलने के बाद मिना से अरफ़ात की तरफ़ रवाना होना है, अरफ़ात मिना से ६ मील पर एक बड़ा मैदान है, यहाँ भी पहले से खेमे लगे होते हैं, वहाँ पहुँच कर अगर ज़रूरत मेहसूस हो तो ज़वाल तक आराम कर लें, फिर जब ज़वाल का वक़्त करीब आए तो बेहतर यह है गुस्ल कर लें

यानी सिर्फ़ बदन पर पानी बहा लें, बदन न मलें, अरफ़ात में एक मस्जिद है, “मस्जिदे नम्रह” इस में इमामे हज ज़ोहर और असर एक साथ पढ़ाते हैं, अगर पहुँच सकें तो आप भी इमाम के साथ ज़ोहर और असर एक साथ पढ़ें। अगर आप इमाम के साथ नमाज़ पढ़ते हैं तो इस का ख़्याल रखें के इमाम इस ज़माने में सूबए नजद से आता है और मुसाफ़िर रहता है इस लिये दोनों नमाज़ों को दो दो रकात कर के क्रम कराता है, आप भी अगर मुसाफ़िर हैं, यानी पन्द्रा दिन से कम क़याम है तो इमाम के साथ क्रम पढ़ लें, और अगर आप मुक़ीम हैं तो आप को चार रकात पढ़नी पड़ेगी, इमाम जब ज़ोहर की दो रकात पर सलाम फ़ेर दे तो आप जल्दी से खड़े हो कर बग़ैर क़िरात के रूकू सज्दे के साथ दो रकात पढ़ कर सलाम फ़ेर दें, इस के बाद इमाम के साथ असर की नमाज़ में शरीक हो जाएं, और जब इमाम असर दो रकात पढ़ा कर सलाम फ़ेर दे तो आप खड़े हो कर बाक़ी दो रकात इसी तरह पूरी कर लें, बाज़ लोग ना वाक़फ़ियत की वजह से बा वजूद मुक़ीम होने के इमाम के साथ सलाम फ़ेर देते हैं, ऐसी सूरत में इन की नमाज़ नहीं होगी उन को अपनी नमाज़ लौटाना पड़ेगी।

(इज़ाहुल मनासिक)

मगर आज कल बहुत मुश्किल है। भीड़ में हो सकता है के आप अपना खेमा भूल जाएँ और भटक जाएँ, इस लिये मुनासिब है के अपने खेमों में जमात के साथ जोहर के वक़्त जोहर और असर के वक़्त में असर की नमाज़ पढ़ें, यहाँ दोनों नमाज़ें एक साथ न पढ़ें इस के बाद ज़िक्र व दुआ में लग जाएँ।

अरफ़ात के यह चन्द घन्टे जोहर से मग़िब तक यह पूरे हज का खुलासा और निचोड़ है यह दुआ की क़बूलियत और मग़ि़रत का दिन है, इस दिन में अल्लाह तआला आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाते हैं और फ़रिश्तों पर फ़ख़ करते हैं, लिहाज़ा पूरी तरह अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा रहें।

आज का खास काम दुआ और इस्तिग़फ़ार है, गुरुब तक क़िब्ला रू खड़े खड़े जितना खड़ा रह सकते हैं, फिर बैठ कर, फिर खड़े रह कर अल्लाह के सामने ख़ूब दुआएँ करें, दुआ की किताब पढ़ें, इस दिन में अपने मालिक को जितना मनवा सकते हैं मनवा लें, अपने लिये, घर वालों के लिये, वालिदैन के लिये, रिश्तेदारों के लिये, मोहसिनीन के लिये, दोस्त व अहबाब के लिये, मरहूमीन के लिये, तमाम हाजियों के लिये और पूरी उम्मत के लिये ख़ूब गिड़ गिड़ा कर दुआएँ

माँगें, जिस ज़बान में माँग सकते हैं माँगें। अरफ़ात के मैदान में ज़वाल से गुरुब तक के वक़्त में थोड़ी देर बुकूफ़ करना यानी ठहरना हज का बहुत बड़ा फ़र्ज़ है।

अरफ़ात के मामूलात

अरफ़ात में ज़ोहर के बाद यह चार अमल करें

१) चोथा कलिमा : सौ मर्तबा

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ “

२) बिस्मिल्लाह के साथ सूरा—ए—इब्लास : सौ मर्तबा

{ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ }

३) दरूदे इब्राहीम आखिर में (वअलैना मअ्हम) : सौ मर्तबा

” اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ

وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ
 إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ“

४) इस्तिगफ़ार जो आप को याद हो : सौ मर्तबा

“اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَاَتُوبُ اِلَيْهِ“

इस के साथ कुआन की तिलावत, मुनाजाते मक़बूल या हिज़बुल आज़म भी पढ़ लें, अरफ़ा के दिन हुज़ूर ﷺ से दूध पीना साबित है, लिहाज़ा सुन्नत की इत्तेबा में आप भी अगर मयस्सर हो तो दूध पी लें या कोई और चीज़ खा पी लें।

मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ रवानगी

जब सूरज गुरुब हो जाए तो मग़्िब की नमाज़ पढ़े बग़ैर मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ रवाना हो जाएँ, मग़्िब की नमाज़ न अरफ़ात में पढ़ें न रास्ते में बल्के मुज़्दलिफ़ा पहुँच कर इशा के वक़्त में मग़्िब और इशा एक साथ पढ़ें, एक अज़ान और एक अक्रामत के साथ पढ़ें यानी अज़ान के बाद तकबीर कह कर मग़्िब की नमाज़ पढ़ें फिर फ़र्ज़ पढ़ कर फ़ौरन इशा की नमाज़ की जमात करें, बग़ैर तकबीर के इस के बाद मग़्िब की सुन्नतें फिर इशा की सुन्नतें और वित्र पढ़ें, मुज़्दलिफ़ा अरफ़ात से ३

मील पर एक मैदान है, यहाँ खेमे नहीं लगे होते हैं, यह रात आप को मुज्दलिफ़ा में गुज़ारनी है, यह रात शबे क़द्र से अफ़ज़ल और ज़्यादा काबिले क़द्र है।

रिवायतों में है के हज्जतुल वदा में रसूलुल्लाह ﷺ ने अरफ़ात में उम्मत के लिये बहुत कुछ माँगा था, सिवाए एक दुआ के अल्लाह ने सारी दुआएं क़बूल फ़रमाई थीं, लेकिन मुज्दलिफ़ा में आप ने ख़ूब गिड़ गिड़ा कर अल्लाह से दुआ की और इसी दुआ को फिर माँगा तो यहाँ पर अल्लाह ने वह दुआ भी क़बूल कर ली और आप उम्मत के अन्जाम से बहुत ही ख़ुश और मुतमईन हो गए और शैतान को आप ने देखा के बहुत ही वावेला कर रहा है और अपने सर पर मिट्टी डाल रहा है।

लिहाज़ा इस रात की भी ख़ूब क़द्र करना है, आम तौर से ऐसा होता है के अरफ़ात से थके हारे आए और यहाँ ख़ूब गहरी नीन्द सो गए और पूरी रात सोने में गुज़र गई, ऐसा न हो, इस का ख़्याल रखें, अगर थकन बहुत ज़्यादा हो तो मग़िब व इशा पढ़ कर थोड़ी देर दुआ कर के कुछ घन्टे आराम करें और सुबह सादिक़ से पहले उठ कर ज़िक़्र व दुआ में मसरूफ़ रहें।

फ़ज़्र की नमाज़ अब्बल वक़्त में पढ़ लें इस के बाद सूरज निकलने के करीब तक ज़िक्र व दुआ में मशगूल हो जाएँ।

फ़ज़्र के बाद से सूरज निकलने के करीब तक थोड़ी देर मुज़्दलिफ़ा में ठेहरना यह हज का वाजिब है, लिहाज़ा फ़ज़्र से पहले हरगिज़ मुज़्दलिफ़ा से न निकलें वरना वाजिब छूट जाएगा और दम देना पड़ेगा और यह बात भी याद रखें के मुज़्दलिफ़ा से फ़ी हाजी सत्तर कन्करियाँ चुन लें।

हज का तीसरा दिन १० ज़िल हिज्जा

जब मुज़्दलिफ़ा में सूरज निकलने का वक़्त करीब हो जाए तो वहाँ से मिना की तरफ़ रवाना हो जाए, आज १० ज़िल हिज्जा यानी कुरबानी का दिन है, हज की मशगूली की वजह से ईद की नमाज़ अल्लाह ने हाजियों से माफ़ कर दी है। आज आप को चार काम करने हैं और बहुत आसान हैं।

(१) रमी (२) कुरबानी (३) हलक़ (४) तवाफ़े ज़ियारत
पहले तीन में तरतीब वाजिब है, तवाफ़े ज़ियारत १० की सुबह से १२ की मग़िब तक कभी भी कर सकते हैं, १० की सुबह को मुज़्दलिफ़ा से सीधे जा कर अगर तवाफ़े ज़ियारत कर लें फिर आकर इतमेनान से बड़े शैतान को कन्करियाँ मारें

तो भी सही है, बल्के अगर जईफ़ कमज़ोर मस्तूरात साथ हो तो इस में आसानी रहती है, क्यों के मताफ़ में ज़्यादा भीड़ नहीं रहती और अगर तवाफ़े ज़ियारत बाद में करना चाहें तो भी कोई हर्ज नहीं बहेर हाल आज मिना में सब से पहले बड़े शैतान को सात कन्करियाँ मारनी है। मिना में तीन जगहों पर लम्बे सुतून बने हुए हैं इन को जमरात कहते हैं। पहला जमरा मस्जिदे ख़ैफ़ के करीब है। जिस को जमर-ए-औला कहते हैं। दूसरा इस से आगे है इस को जमर-ए-वुस्ता यानी दर्मियानी जमरा कहते हैं। तीसरा बिल्कुल मिना के अखीर में है जिस को जमर-ए- उक्रबा यानी बड़ा जमरह कहते हैं। पहले बड़े शैतान को सात कन्करियाँ मारना है। इस का अफ़ज़ल वक़्त सूरज निकलने के बाद से ज़वाल तक है, मगर इस के बाद भी मार सकते हैं, इस में जल्द बाज़ी बिल्कुल न करें। जिस वक़्त सहूलत और आसानी हो उस वक़्त मारें, वक़्त सुबह सादिक़ तक रहता है आम तौर पर हादसात इसी मौक़े पर होते हैं। इस लिये इतमेनान से काम करें।

दूसरे और तीसरे दिन तीनों शैतानों को कन्करियाँ मारना है और वक़्त ज़वाल के बाद से सुबह सादिक़ तक है।

यह बात भी याद रखें के शैतान को कन्करियां ऊपर के हिस्से में जा कर मारें इस में ज़्यादा सहूलत है। और अभी तक जो आप लब्बैक पढ़ रहे थे बड़े शैतान पर पहली कन्करी के साथ लब्बैक बन्द कर दें।

१० तारीख का पहला काम

तो १० तारीख का पहला काम बड़े शैतान को सात कन्करियाँ मारना है कन्करी शहादत की उंगली और अंगूठे से पकड़ें और हर कन्करी के साथ यह दुआ पढ़ते जाएँ

”بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ
وَرِضَى لِلرَّحْمَنِ“

मैं कन्करी मारता हूँ शैतान को ज़लील करने और रहमान को राज़ी करने के लिये, अगर पूरी दुआ याद न हो तो सिर्फ़ “बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर” कह कर अपनी ज़बान में कहें “शैतान को ज़लील करने और रहमान को राज़ी करने के लिये” यह बात भी ज़हन में रखें के कन्करी सुतून को ही लगे यह ज़रूरी नहीं बल्के सुतून के अतराफ़ में बने हुए दायरे में भी गिर जाएगी तो वाजिब अदा हो जाएगा। यह बात भी

समझ लें के कन्करियाँ क्यों मारी जाती हैं?

हज़रत इब्राहीम عليه السلام जब अपने बेटे इस्माईल को ज़बह करने चले तो सब से पहले शैतान पहले जमरे के पास मिला और इरादे से रोकना चाहा, हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने सात कन्करियाँ मारीं तो वह ज़मीन में धंस गया, आगे बढ़ कर फिर दूसरे जमरे के पास नज़र आया, यहां भी सात कन्करियाँ मारीं वह ज़मीन में धंस गया फिर छोटे जमरे की जगह नज़र आया, यहां भी सात कन्करियाँ मारीं वह ज़मीन में धंस गया।

अल्लाह तआला को अपने बन्दे इब्राहीम عليه السلام का इख्लास और आशिकाना अमल पसन्द आगया तो क्रयामत तक हाजियों को हुक्म दे दिया के तुम भी इन जगहों पर कन्करियाँ मारो।

रमी में नाइब बनाना कब जाइज़ है?

कोई ऐसा बीमार है और कमज़ोर या बूढ़ा और अपाहज है जो जमरात पर पहुँच कर रमी की ताक़त नहीं रखता तो उस की तरफ़ से दूसरे को नाइब बनाना जाइज़ है यानी उस की कन्करी दूसरा मार सकता है, वह दूसरा आदमी पहले अपनी कन्करी मारे फिर उस की मारे लेकिन अगर औरत तन्दुरूस्त

है, सिर्फ भीड़ से घबरा कर या पैदल चलने की थकन की वजह से दूसरे को नाइब बना दे तो जाइज़ नहीं है, बल्के उस को खुद मारनी पड़ेगी, या कोई मर्द महज़ भीड़ या थकान की वजह से दूसरे को नाइब बना दे तो जाइज़ नहीं है, अगर ऐसा किया तो रमी न होगी और दम वाजिब होगा।

(इज़ाहुल मनासिक)

१० ज़िल हिज्जा का दूसरा काम

कुरबानी करना है, आप का हज तमत्तो है तो आप पर कुरबानी वाजिब है (इसी तरह किरान करने वालों पर भी वाजिब है अलबत्ता इफ़राद करने वालों पर वाजिब नहीं मुस्तहब है, कर लें तो अच्छा है न करें तो कोई हरज नहीं) यह कुरबानी हज के शुकराने की है, इस के अलावा आप पर जो सालाना कुरबानी है, वह तो बाक़ी है, वह भी करना है, हाँ ! वह कुरबानी आप अपने वतन में भी करवा सकते हैं, बेहर हाल १० तारीख को रमी से फ़ारिग हो कर बेहतर तो यह है के खुद कुरबान गाह पर जाकर अपने हाथ से अपनी पसन्द का जान्वर वुसअत के मुताबिक़ खरीद कर कुरबानी करें, अगर खुद नहीं जा सकते तो किसी ख़ास आदमी को वक़्त मुतअय्यन कर के वकील बना दें। वक़्त इस लिये मुतअय्यन

करना है ताके आप सर मुन्डवा सकें। क्यों के कुरबानी से पहले सर नहीं मुन्डवा सकते।

हुकूमत की तरफ़ से जो कुरबानी के हिस्से लिये जाते हैं या और कोई पराइवेट कुरबानी का जो नज़्म रहता है तो वहाँ पर भी आप कुरबानी कर सकते हैं, मगर वक़्त मुतअय्यन करने में आप होशियार रहें, जो वक़्त आप की कुरबानी का वह लोग बताएं तो एहतियातन उस से दो घन्टे लेट ही अपना हलक़ करवाए।

१० ज़िल हिज्जा का तीसरा काम

कुरबानी के बाद अपने सर के बाल मुन्डवा लें और औरतें अपने बालों के अखीर हिस्से से सिर्फ़ एक उंगल करीब देढ इन्च बाल काटें यह हलक़ हज के वाजिबात में से है।

तो १० ज़िल हिज्जा को जब आप ने शैतान को कन्करियां मार ली, कुरबानी भी कर ली और सर भी मुन्डवा लिया तो आप का एहराम ख़तम हो गया, अब आप सिले हुए कपड़े पहन सकते हैं और वह सब चीज़ें हलाल हो गईं जो एहराम की वजह से हराम थीं, मगर एक पाबन्दी अभी भी

बाक्री है के बीवी अभी हलाल नहीं हई, जब तवाफ़े ज़ियारत कर लेंगे तो बीवी भी हलाल हो जाएगी।

१० ज़िल हिज्जा का चौथा काम

यह बात ज़हन में रखें के रमी, कुरबानी और हलक़ इन तीनों में तरतीब वाजिब है। पहले रमी करना है इस के बाद कुरबानी फिर हजामत, अगर तरतीब उलट दी तो दम वाजिब होगा।

अच्छा! जब तीनों काम हो गए तो आज का छौथा काम है, तवाफ़े ज़ियारत, यह हज का फ़र्ज़ है मक्का जाकर तवाफ़े ज़ियारत कर लें यह तवाफ़ भी ऐसा है जैसा उमरह का तवाफ़ आप ने किया था के हज़रे अस्वद के इस्तेलाम से तवाफ़ शुरू होगा, सात चक्कर होंगे। हाँ! यह तवाफ़ चूँके आम तौर पर अपने कपड़ों में होता है क्यों के हाजी कुरबानी कर के हलक़ करवा लेता है और एहराम उतार लेता है, तो इस में इज़्तिबा न होगा। लेकिन अगर कुरबानी कर के आप ने हलक़ नहीं किया और एहराम में ही आकर तवाफ़े ज़ियारत करते हैं तो तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में रमल होगा यानी काँधे हिलाते हुए अकड़ते हुए चलेंगे और सातों चक्करों में

इज्जिबा होगा यानी दाहने बगल से एहराम की चादर निकाल कर बाएँ काँधे पर डालेंगे।

अगर एक ही दिन में चारों काम न हो सके तो कोई हर्ज नहीं है। रमी कर लें फिर कुरबानी और हलक़। तवाफ़े ज़ियारत दूसरे दिन करें, अगर इतना भी न हो सके तो सिर्फ़ रमी आज कर लें, दूसरे दिन कुरबानी और तवाफ़े ज़ियारत कर लें।

तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई

यह बात ज़ेहन में रखें के उमरह वाले तवाफ़ के बाद जो सई है यह उमरह की सई है। और तवाफ़े ज़ियारत के बाद जो सई है यह हज की सई है। और नफ़ली तवाफ़ जितने भी आप करेंगे उस में सई की ज़रूरत नहीं है। हाँ नफ़ली उमरह करेंगे तो तवाफ़ के बाद सई होगी।

अब सई करने में यह बात ध्यान में रखें के इफ़राद, क़िरान और तमत्तो वाले तीनों तरह के हाजियों ने मक्का में आते ही तवाफ़ किया था तो इफ़राद वाले का तवाफ़े कुदूम था और क़िरान और तमत्तो वालों का यह उमरह का था। इन दोनों ने इस तवाफ़ के बाद सई भी की थी, तो यह उमरह की

सई थी , अब तवाफ़े ज़ियारत करने के बाद तमत्तो और क़िरान वालों को हज की सई करना ज़रूरी है, लिहाज़ा यह दोनों तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई करेंगे और इफ़राद वाले ने अगर तवाफ़ कुदूम के साथ सई भी की थी तो इस को तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई करने की ज़रूरत नहीं इस की पहली सई हज की सई हो जाएगी और ऐसी सूरत क़िरान के लिये भी है के अगर क़िरान वाले ने उमरह का तवाफ़ व सई करने के बाद जब तवाफ़े कुदूम किया तो इस के साथ अगर इस ने सई कर ली है तो क़िरान वाले को भी तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई करने की ज़रूरत नहीं है और क़िरान वाले के लिये यह अफ़ज़ल है ।

इसी तरह तमत्तो वाला भी अगर हज की सई पहले करना चाहे तो ८ ज़िल हिज्जा को जब हज का एहराम बाँधे तो उस वक़्त बैतुल्लाह का तवाफ़ कर के सई भी कर ले तो यह सई हज की हो जाएगी । अब इस को तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई की ज़रूरत नहीं है ।

नोट : तवाफ़े कुदूम सुन्नत है इफ़राद और क़िरान वाले के लिये, क़िरान वाला उमरह का तवाफ़ व सई कर के तवाफ़े

कुदूम करेगा। तमत्तो वाले पर तवाफ़े कुदूम नहीं है।

बहेर हाल आप का हज तमत्तो है तो आप को तवाफ़े ज़ियारत के बाद सई करनी है चाहे पहले करें या बाद में।

तवाफ़े ज़ियारत हज का फ़र्ज़ है अगर किसी ने तवाफ़े ज़ियारत नहीं किया और चला गया तो जब तक दोबारा मक्का आकर तवाफ़े ज़ियारत न करे उस की बीवी उस पर हराम रहेगी चाहे सालहा साल गुज़र जाए। तवाफ़े ज़ियारत १२ की मग़िब तक कर लेना है, अगर बहुत भीड़ हो और आप के साथ ज़ईफ़ लोग या मस्तूरात हों तो सिर्फ़ तवाफ़ भी कर सकते हैं सई बाद में कर लें।

अगर हज के दौरान औरत को नापाकी की हालत पेश आजाए तो वह हज के तमाम उमूर अदा करे सिर्फ़ तवाफ़े ज़ियारत उस वक़्त तक न करे जब तक पाक न हो जाए, न हरम में दाख़िल हो, इस ताख़ीर से उस पर दम वाजिब न होगा, न गुनाह होगा। अलबत्ता पाक होने के बाद फ़िर ताख़ीर न करना चाहिये।

हज का चौथा दिन ११ ज़िल हिज्जा

आज आप को ज़्यादा काम नहीं करना है, अगर दस

तारीख को कुरबानी और तवाफ़े ज़ियारत नहीं किया था तो इस को आज कर लें, अगर कर लिया था तो ठीक है। आज का काम तीनों शैतानों को सात सात कन्करियां मारना है। वक़्त ज़वाल के बाद से सुबह सादिक़ तक रहता है। इस में भी जल्द बाज़ी न करें। पहले छोटे शैतान को सात कन्करियां मारें, हर कन्करी के साथ दुआ भी पढ़ते जाएं जो पहले बताई गई। फिर मजमे से थोड़ा हट कर क़िब्ला रू हाथ उठा कर दुआ करें। फिर दर्मियानी शैतान को इसी तरह सात कन्करियां मारें और थोड़ा दूर हट कर दुआ करें। फिर बड़े शैतान को भी इसी तरह सात कन्करियां मारें और यहाँ दुआ न करें, इस के बाद रात मिना में ही गुज़ारें नमाज़ों और दुआओं के एहतेमाम के साथ।

हज का पाँचवां दिन १२ ज़िल हिज्जा

अगर किसी वजह से १० और ११ को आप कुरबानी और तवाफ़े ज़ियारत नहीं कर सके थे तो आज इस से फ़ारिग़ हो जाएँ, आज मरिब तक किसी हालत में तवाफ़े ज़ियारत कर लेना। अगर आज मरिब तक नहीं कर सके तो दम देना पड़ेगा और तवाफ़े ज़ियारत तो करना ही है, और अगर

मग़िब से पहले आप ने तवाफ़े ज़ियारत शुरू तो कर दिया मगर पूरा नहीं कर सके तो इस सूरत में मग़िब से पहले आप के चार या इस से ज़्यादा चक्कर हुए हैं मसलन पाँच चक्कर हुए तो दो बाक़ी रह गए तो दो सदक़ए फ़ित्र पौने दो किलो गेहूँ के हिसाब से देना पड़ेगा, और अगर चार से कम चक्कर हुए मसलन दो या तीन तो इस सूरत में तवाफ़ तो मग़िब के बाद पूरा कर लें और दम देना पड़ेगा। इस के बाद आज भी आप को तीनों शैतानों को सात सात कन्करीं मारना है, बिल्कुल उसी तरह जैसे कल मार चुके हो, हर कन्करी के साथ दुआ भी पढ़नी है, पहले और दूसरे शैतान को कन्करी मार कर मजमा से हट कर थोड़ी देर दुआ करनी है, तीसरे शैतान को कन्करी मार कर दुआ नहीं करनी है।

आज भी रमी का वक़्त ज़वाल से सुबह सादिक़ तक है लिहाज़ा जल्द बाज़ी न करें, रात में भी मार सकते हैं आज रमी करने के बाद अगर आप मक्का मुकर्रमा जाना चाहें तो जा सकते हैं।

मगर यह बात याद रखें अगर १२ तारीख़ को मक्का जाना है तो मग़िब तक या इशा के बाद निकल जाएँ, अगर

रमी में ताखीर होगई और मिना में सुबहा सादिक होगई तो अब तेरहवीं की रमी वाजिब होगई अब बगैर रमी किये नहीं जा सकते, अलबत्ता तेरा की रमी ज़वाल से पहले भी कर सकते हैं, मगर बेहतर शकल आप यह अपनाएँ के इतमेनान से अरकान अदा करें और तेरा को भी कन्करियां मार कर ही मक्का जाएँ तो एक सुन्नत भी अदा हो जाएगी और जल्द बाज़ी और भाग दौड़ भी नहीं करनी पड़ेगी।

रमी की फ़ज़ीलत

रमी की बड़ी फ़ज़ीलत है, हर कन्करी पर अल्लाह तआला एक मोहलिक, भारी गुनाह माफ़ करता है, जो आदमी को हलाक करने के लिये काफ़ी होता है।

तवाफ़े विदा

अब माशाअल्लाह आप का हज अल्लाह ने पूरा कर दिया। अब आप पर कोई ख़ास काम बाक़ी नहीं रहा, सिर्फ़ एक काम रह गया, वह यह के जब आप मक्का से रुख़सत होंगे तो आप को रुख़सती तवाफ़ करना है। जिस को तवाफ़े विदा कहते हैं, वह भी सिर्फ़ तवाफ़ है, इस में सई नहीं है, और इस में भी यह सहूलत है के बिल्कुल निकलते वक़्त

अगर मौक़ा नहीं मिल सका तो कोई हर्ज नहीं है। हज के बाद मक्का में जितने दिन आप रहेंगे तो इस में आप नफ़ली तवाफ़ करेंगे ही, तो जो आखरी तवाफ़ आप ने किया है वह रुख़सती तवाफ़ समझा जाएगा, लेकिन अगर आप को यह पता है के कितने बजे निकलना है और मौक़ा है तो आखरी तवाफ़ ध्यान के साथ ज़रूर कर लें।

अब आप को जो दिन मक्का में रहने के लिये मिल जाएँ उस को ख़ूब ग़नीमत समझें, और अल्लाह का शुक्र अदा करें के उस ने आप को यह सआदत नसीब की है, दिन रात में जितने हो सके नफ़ली तवाफ़ करें, नफ़ली उमरह करें, अपने लिये, अपने वालिदैन के लिये, मोहसिनीन के लिये, रिश्तेदारों के लिये, पूरी उम्मत के लिये ख़ूब दुआएँ भी करें, काबा के सामने नफ़ली नमाज़ें पढ़ें, बड़ी मुबारक जगह है, जहाँ अम्बिया के क़दम पड़े हैं, नबियों के सरदार के क़दम पड़े हैं, अल्लाह वालों के क़दम पड़े हैं, हज़रे अस्वद जन्नत का पत्थर है, उस को बोसा दें, मुलतज़िम से चिमट कर रो रो कर दुआएँ करें, हतीम जो ख़ान-ए-काबा का हिस्सा है इस में नमाज़ पढ़ें, मुहब्बत व अज़मत से अल्लाह के घर को

सिर्फ़ देखते ही रहें, क्या पता इन मुबारक जगहों पर फिर हाज़री की सआदत मयस्सर आती है या नहीं, कितने लोग उम्मीदें ले कर दुनिया से चले गए और मौक़ा नहीं मिल सका और अल्लाह ने आप को सुनहरी मौक़ा दिया है, इस लिय इस को ख़ूब ग़नीमत समझें और अल्लाह की रहमतों और उस की नेमतों को जितना लूट सकें लूटें।

मज़े लूटो कलीम अब बन पड़ी है
बड़ी ऊंची जगह किसमत लड़ी है

नक़्शा हज व उमरह

नीचे में एक नक़्शा पेश किया जाता है जिस में उमरह और हज के कामों की निशान्दही के साथ इस की वज़ाहत है के उमरह और हज में फ़राइज़ कितने हैं और वाजिबात कितने हैं।

उमरह का नक़्शा

उमरह में चार काम करना है। २ फ़र्ज़ और २ वाजिब

१)	निय्यत और तलबिया के साथ एहराम	(फ़र्ज़)
२)	रमल और इज़्तिबा के साथ तवाफ़	(फ़र्ज़)
३)	सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई	(वाजिब)

४) सर मुन्डवाना या कतरवाना

(वाजिब)

हज के पाँच दिनों में ९ काम करने हैं। ३ फ़र्ज़ और ६ वाजिब।

हज के तीन फ़र्ज़ यह हैं :

१) निय्यत तलबिया के साथ एहराम २) ९ ज़िल हिज्जा को ज़वाल से गुरूब तक थोड़ी देर अरफ़ात में वुकूफ़ (ठेहरना) ३) तवाफ़े ज़ियारत

हज के छः वाजिब यह हैं :

१) मुज़्दलिफ़ा में वुकूफ़ (ठेहरना) २) सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई ३) शैतानों को कन्करियाँ मारना ४) कुरबानी करना ५) सर के बाल मुन्डवाना या कतरवाना ६) तवाफ़े वदा करना।

हज का नक़्शा

हज का पहला दिन ८ ज़िल हिज्जा :	एहराम बाँध कर मिना पहुँचना है, मिना में ज़ोहर, असर, मग़्िब, इशा और ९ की फ़ज़्र	(फ़र्ज़)
हज का दूसरा दिन ९ ज़िल हिज्जा :	आज सूरज निलकने के बाद अरफ़ात में जा कर ठेहरना है। इशा के वक़्त में मग़्िब व इशा एक साथ मुज़्दलिफ़ा में पढ़ना।	(फ़र्ज़)

<p>हज का तीसरा दिन १० ज़िल हिज्जा :</p>	<p>आज फ़ज़्र से सूरज निकलने तक थोड़ी देर <u>मुज़्दलिफ़ा</u> में ठहरना। फिर मिना में जाकर <u>बड़े शैतान को सात कन्करियाँ मारना</u> है। फिर <u>कुरबानी करना</u> है। फिर सर के <u>बाल मुन्डवाना</u> है या कतरवाना। फिर <u>तवाफ़े ज़ियारत करना</u> है। इस के साथ सई भी करना है।</p>	<p>(वाजिब) (वाजिब) (वाजिब) (वाजिब) (फ़र्ज़)</p>
<p>हज का चौथा दिन ११ ज़िल हिज्जा :</p>	<p><u>तीनों जमरात की रमी करना</u> है, <u>कुरबानी</u> और तवाफ़े ज़ियारत अगर दस को न किया हो।</p>	<p>(वाजिब) (वाजिब)</p>
<p>हज का पाँचवां दिन १२ ज़िल हिज्जा :</p>	<p>आज भी <u>तीनों जमरात की रमी करना</u> है, <u>कुरबानी</u> और तवाफ़े ज़ियारत अगर पहले दो दिन न हुआ हो तो।</p>	<p>(वाजिब)</p>

ज़ियारते मदीना मुनव्वरा

हज के बाद सब से अफ़ज़ल और सब से बड़ी सआदत सैय्यदुल अम्बिया रहमतुलिल्लआलमीन ताजदारे मदीना रसूले मक़बूल ﷺ के रौज़-ए-अक़दस की ज़ियारत है। रसूलुल्लाह ﷺ की अज़मत व मुहब्बत वह चीज़ है जिस के बग़ैर ईमान ही मुकम्मल नहीं होता, इस का तक्राज़ा ईमान वाले को फ़ितरी तौर पर भी होना चाहिये के दयारे कुदस में पहुंचने के बाद रौज़-ए-अक़दस की ज़ियारत के बग़ैर वापस न हो। और इस पर मज़ीद यह के रौज़-ए-अक़दस के सामने हाज़री और सामने हाज़िर हो कर दुरूद व सलाम के वह अज़ीमुशशान इनामात और समरात व बरकात जो दूर से दुरूद व सलाम पढ़ने से हासिल नहीं हो सकते।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिस ने हज किया फिर मेरी क़बर की ज़ियारत मेरी वफ़ात के बाद की तो गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। (मिशकात)

एक हदीस में इशादि नब्वी है जिस ने मेरी क़बर की ज़ियारत की उस के वासते मेरी शफ़ाअत वाजिब होगी।

(ज़ब्दा)

एक हदीस में हुजूर ﷺ का इर्शाद है जिस ने बैतुल्लाह का हज किया और मेरी ज़ियारत न की तो उस ने मुझ पर जुल्म किया। (शरह लुबाब)

दयारे हबीब का सफ़र

जब मदीना तय्यिबा की तरफ़ चलें तो रासते में कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें और मुहब्बते नब्वी को बेदार करने के लिये आप को ज़ौक़ हो तो नातिया अशआर भी ख़ूब पढ़ें।

यह सफ़र आप का बस से होगा, बसें और गाडियाँ चन्द घन्टों में आप को मदीना पहुँचा देगी, आप को रास्ते में कहीं गुस्ल करने या लिबास बदलने का मौक़ा नहीं मिलेगा, इस लिये मुनासिब है के आप मदीना की रवानगी से पहले गुस्ल कर लें और मदीना की हाज़री की निय्यत से अच्छे कपड़े बदल लें, ख़ुशबू लगाएं, रासते में ख़ूब ज़ौक़ व शौक़ के साथ दुरूद व सलाम पढ़ते रहें।

मदीना तय्यिबा में दाख़ला

जब मदीना तय्यिबा की इमारतें और दरख़्त नज़र आने लगें तो ज़ौक़ व शौक़ को बेदार कर के ख़ूब दुरूद शरीफ़ पढ़ें। ख़ुशू ख़ुजू और तवाज़ो की कैफ़ियत पैदा करें। जब मदीना मुनव्वरा से करीब होने लगें तो अल्लाह तआला से दुआ करें

के : ऐ अल्लाह यह तेरे हबीब का शहर है और तेरे हबीब ने तेरे हुक्म से इस को हरम करार दिया है, इस में मेरे दाखले और मेरी हाज़री को हर क्रिस्म के अज़ाब से अमान का ज़रिया बना। और मदीना में दाखले के वक़्त अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा हो कर खुशू खुजू के साथ पढ़ें

”بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
رَبِّ أَدْخِلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ
وَاجْعَلْنِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا
(गुनिया २०३)

ऐ परवरदिगार मुझे सही तौर पर दाखिल कीजिये और मुझे सही तौर पर निका लिये और अपनी तरफ़ से मेरे लिये मददगार बना दीजिये। फिर चलते चलते दुआ करें ऐ अल्लाह जिस करम से तू ने मुझे यह दिन दिखाया है के मैं तेरे हबीब के महबूब शहर में दाखिल हो रहा हूँ इसी करम से तू मुझे यहाँ की खास बरकतें अता फ़रमा और उन तमाम बातों से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा जो इन बरकतों से महरूमी का ज़रिया हों।

मस्जिदे नब्वी में हाज़री

मदीना मुनव्वरा में भी बसैं आप को बिल्डिंग तक पहुँचा देगी। सामान तरतीब से रख कर ज़रूरियात से फ़ारिग हो कर

अगर दाखले से पहले गुस्ल और कपड़े बदलने का मौक़ा न मिला हो तो अब गुस्ल या वुजू कर के कपड़े बदल कर सब से पहले मस्जिदे नब्वी में हाज़िर हों, मस्जिद में दाहिने पैर से दाखिल होते हुए यह दुआ पढ़ें :

”بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَاغْفِرْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ“

(गुनयतुलमनासिक ९७)

सब से पहले मस्जिद के उस हिस्से में जाएँ जो रौज़-ए-अक़दस और मिम्बर शरीफ़ के दर्मियान है जिस के मुतअल्लिक खुद हुज़ूर ﷺ ने “رَوْضَةٌ مِّنْ رِّيَاضِ الْجَنَّةِ” फ़रमाया है यानी यह जन्नत की कियारियों में से एक कियारी है। रियाज़ुल जन्नह की पहचान के लिये यहाँ सफ़ेद क़ालीन बिछा हुआ है, यहाँ पहुँच कर दो रकात तहिय्यतुल मस्जिद अदा करें, फिर अल्लाह तआला से ख़ूब दुआ करें। तहिय्यतुल मस्जिद के बाद अल्लाह तआला का बहुत शुक्र अदा करें, आप बड़ी ऊँची जगह पहुँचे हैं, जितना शुक्र अदा करें कम है।

उलमा ने लिखा है के इस मौक़े पर सज्द-ए-शुक्र भी

कर लें , फिर अल्लाह तआला से ख़ुब दुआ करें।

मस्जिदे नब्वी के सुतून और रियाज़ुल जन्नह

रियाज़ुल जन्नह की पहचान के लिये यहाँ सफ़ेद संगे मरमर के छः सुतून हैं, जिन को उस्तवानात कहा जाता है, क़बूलियते दुआ की ख़ास जगह है। पहला सुतून मेहराब से मुत्तसिल है जिस को उस्तवान-ए-हन्नाना या मुखल्लका कहते हैं। इस सुतून से टेक लगा कर हुज़ूर ﷺ ख़ुतबा दिया करते थे।

दूसरा सुतून मेहराब के बाएँ जानिब है। जिस को उस्तवान-ए-आइशा कहते हैं। इस जगह के बारे में हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है अगर मैं बता दूँ तो लोग वहाँ नमाज़ के लिये कुर्रा अन्दाज़ी करने लगेंगे क्यों के यह जन्नत का एक टुकड़ा है इस जगह की निशान्दही हज़रत आइशा رضي الله عنها ने की थी इस लिये इस सुतून को उस्तवान-ए-आइशा कहा जाता है।

उस्तवान-ए-आइशा की बाएँ जानिब उस्तवान-ए-अबू लुबाबा है। इस जगह हज़रत अबू लुबाबा सहाबी ने एक ग़लती पर खुद को खज़ूर के सुतून से बाँध लिया था फिर उन

की तौबा क़बूल होने पर खुद हुज़ूर ﷺ ने आप को खोला था। रौज़-ए-अक़दस की जाली में तीन सुतून हैं। आधे जाली के बाहर रियाज़ुल जन्नह में और आधे जाली के अन्दर के हिस्से में है।

पहला उस्तवान-ए-सरिर है। यहाँ आप ﷺ हालते एतिकाफ़ में चटाई पर एतिकाफ़ फ़रमाते थे, इस के क़रीब दूसरा उस्तवाना-ए-हरस है। यहाँ सहाबा रात को आप ﷺ के हुज़र-ए-मुक़द्दसा की निगरानी करते थे।

और इस के क़रीब उस्तवान-ए-वफूद है यहाँ पर आप ﷺ बैरून से आने वालों के साथ बात चीत करते, मुआहदा करते और दीन सिखाया करते। यह छः सुतून और रियाज़ुल जन्नह का पूरा हिस्सा क़बूलियते दुआ के लिये ख़ास है और यहाँ नमाज़ें अदा करना ज़्यादा सवाब का बाइस है।

रौज़-ए-अक़दस पर दुरूद व सलाम

तहिय्यतुल मस्जिद और दुआ से फ़ारिग़ हो कर पूरे अदब और होश के साथ रौज़-ए-अक़दस पर आएँ और निहायत अदब के साथ यह समझते हुए के मैं ख़िदमते

अक़दस में हाज़िर हूँ और हूज़ूर ﷺ मेरी बात बनफ़से नफ़ीस सुन रहे हैं, हल्की आवाज़ से सलाम अर्ज़ करें। जाली में पीतल के तीन हलक़े बने हुए हैं इन में जो बड़ा है वह हुज़ूर अक़दस ﷺ के चेहर-ए-अनवर के सामने है और दूसरे के बराबर में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه हैं और तीसरे के बराबर में हज़रत उमर फ़ारूक़ رضي الله عنه हैं।

यह ध्यान रखें के भीड़ यहाँ ज़्यादा होती है तो कीसी को तकलीफ़ न पहुँचे। सलाम के बारें में ज़ौक़ मुख्तलिफ़ हैं बाज़ लोग मुख्तसर सलाम पसन्द करते हैं उन के लिये यही अच्छा है के मुख्तसर सलाम पेश करें। सलफ़ का आम ज़ौक़ यही रहा है और जो अरबी से वाक़िफ़ नहीं हैं उन के लिये यही बेहतर है के मुख्तसर सलाम अर्ज़ करें और भीड़ की वजह से मौक़ा भी लम्बे सलाम का नहीं रहता। मुख्तसर तौर पर यूँ सलाम अर्ज़ करें :

” الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ
 وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
 عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

(फ़तहल क़दीर ३/१६९)

“سَيِّدَ وُلْدِ آدَمَ”

अगर कोई लम्बा सलाम अर्ज़ करना चाहे तो किताब के अखीर में लिखा गया है वहाँ देख ले, सलाम अर्ज़ करने के बाद हुज़ूर ﷺ से शफ़ाअत की दरख्वास्त करें के या रसूलुल्लाह ﷺ मैं अल्लाह के सामने अपने गुनाहों से तौबा करता हूँ और माफ़ी माँगता हूँ, आप भी मेरे लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाएँ और अल्लाह के दरबार में आप का वसीला चाहता हूँ इस बात पर के मुसलमान होने की हालत में आप की सुन्नत व मिल्लत पर मरूँ।

दूसरों की तरफ़ से रौज़-ए-अक़दस पर सलाम

इस के बाद जिन दोस्तों ने, बुज़ुरगों ने और अज़ीज़ों ने आप से सलाम की फ़रमाइश की हैं और बाज़ से आप ने वादा भी कर लिया है उन का सलाम हुज़ूर ﷺ को पहुँचाएं नाम याद हो तो नाम ले कर या सब की तरफ़ से इस तरह कहें के या रसूलुल्लाह ﷺ आप पर ईमान रखने वाले और आप का नाम लेने वाले चन्द बुज़ुरगों और अज़ीज़ों ने सलाम अर्ज़ किया है आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएँ और उन के लिये अपने रब से मग़्फ़िरत माँगें वह भी आप की शफ़ाअत के

तलबगार और उम्मीदवार हैं (यह बात ध्यान में रहे के हुजूर
 ﷺ की शफ़ाअत अल्लाह की इजाज़त से ही होगी)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ पर सलाम

हुजूर ﷺ पर सलाम से फ़ारिग़ हो कर एक हाथ के
 बक़द्र दाएँ तरफ़ हट कर दूसरे हलक़े के पास आजाएँ और
 हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ पर इस तरह सलाम पेश करें।

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ وَثَانِيَهُ فِي
 الْغَارِ وَرَفِيقَهُ فِي الْأَسْفَارِ وَآمِينَهُ عَلَى الْأَسْرَارِ أَبَا
 بَكْرٍ الصِّدِّيقِ جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(फ़तहुल क़दीर ३/१८)

तर्जमा : आप पर सलाम हो ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ के
 खलीफ़ा, ग़ार में उन के साथी, सफ़रों में उन के रफ़ीक़, उन
 के राज़ों के अमीन अबू बक्र सिद्दीक़ ﷺ पर सलाम हो,
 अल्लाह तआला आप को उम्मत मुहम्मदिया की तरफ़ से
 जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए। फिर जिन लोगों ने सलाम कहा
 हो उन का सलाम पहुँचा दें।

हज़रत उमर फ़ारूक رضي الله عنه पर सलाम

हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه पर सलाम से फ़ारिग हो कर एक हाथ दाएँ तरफ़ हट कर तीसरे हलक़े के पास आजाएँ और हज़रत उमर رضي الله عنه को इन अलफ़ाज़ में सलाम अर्ज़ करें।

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ الْفَارُوقَ
الَّذِي أَعَزَّ اللَّهُ بِهِ الْإِسْلَامَ إِمَامَ الْمُسْلِمِينَ مَرْضِيًّا
حَيًّا مَيِّتًا جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(गुनयतुल हदीद ३८)

तर्जमा : ऐ अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक رضي الله عنه आप पर सलाम हो जिन के ज़रिये अल्लाह ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमाया, ऐ मुसलमानों के इमाम ज़िन्दगी और मौत में अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा, अल्लाह तआला आप को उम्मते मुहम्मदिया की तरफ़ से जज़ा—ए—ख़ैर अता फ़रमाए।

फ़िर जिन लोगों ने सलाम कहा हो उन का सलाम पहुँचा दें। इस के बाद रियाज़ुल जन्नह में जा कर दो रकात पढ़ कर ख़ूब दुआ माँगें।

मदीना के क़याम को ख़ूब ग़नीमत समझें, जहाँ तक हो सके ज़्यादा वक़्त मस्जिदे नब्वी में गुज़ारें और दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ते रहें, वक़्त ज़ाए न हो इस का ख़्याल रखें।

ज़ियारते जन्नतुल बक़ी

मदीना तय्यिबा में मस्जिद शरीफ और रौज़-ए-अक़दस के बाद सब से अहम मक़ाम वहाँ का क़दीमी क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ी है जो हरमे नब्वी से बिल्कुल मिला हुआ है। कैसा ख़ुश नसीब यह जन्नत का टुकड़ा है। ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ ने कितने मरने वालों को अपने हाथ से इस में दफ़न किया है, आप ﷺ की अक्सर अज़वाजे मुताहरात, आप की साहबज़ादियाँ और अहले बैअत के बहुत से मुम्ताज़ अप्पाद और कितने जलीलुल क़द्र सहाबा, फ़िर बेशुमार ताबईन व तबा ताबईन और बाद के अन गिनत अईम्म-ए-उज़्ज़ाम और औलियाए किराम इस में आराम कर रहे हैं। कहने वाले ने सच कहा है :

दफ़न होगा न कहीं ऐसा खज़ाना हर्गिज़

जन्नतुल बक़ी में दाख़िल होते ही दाएं तरफ़ हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अब्बास, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन,

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन का सर मुबारक फिर कुछ फ़ासले पर हुज़ूर ﷺ की तीन बेटियाँ हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुक़य्या, और हज़रत उम्मे कुलसूम फिर हुज़ूर ﷺ की अज़वाजे मुताहरात (बीवियाँ) उम्महातुल मोमीनीन हज़रत आइशा सिद्दीका, हज़रत सौदा, हज़रत ज़ैनब बिनते जहश, हज़रत ज़ैनब बिनते ख़ुज़ैमा, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत हफ़सा, हज़रत उम्मे हबीबा, हज़रत जुवैरिया, हुज़ूर ﷺ की सब से पहली बीवी हज़रत खदीजा मक्का में जन्नतुल मुअल्ला में मदफून हैं और दूसरी बीवी हज़रत मैमूना मक़ामे शरीफ़ में मदफून हैं, बाक़ी सब बीवियाँ जन्नतुल बक़ी में हैं।

फ़िर उन के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब फिर थोड़ा आगे बढ़ कर बाएँ तरफ़ हुज़ूर ﷺ के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम फिर थोड़ा आगे बढ़ें तो आगे सैय्यदना उस्मान गनी का मज़ार है, जन्नतुल बक़ी में सब से ऊँचा और बड़ा मक़ाम हज़रत उस्मान का है, फिर बाएँ तरफ़ हज़रत हलीमा सादिया का है, जो हुज़ूर ﷺ की रज़ाई माँ हैं, फिर उस की दाएँ जानिब हज़रत अबू सईद ख़ुद्री, हज़रत अली की वालिदा हज़रत

फ़ातिमा, फिर दाहनी तरफ़ हुज़ूर ﷺ की फुफ़ियाँ हज़रत सफ़िया, हज़रत आतिका, हज़रत उम्मुल फ़ज़ल ऐसी मुबारक हस्तियाँ बक़्री में आराम फ़रमा हैं।

मस्जिदे नब्वी में नमाज़ का सवाब

मस्जिदे नब्वी में बा जमात नमाज़ पढ़ने का बहुत ज़्यादा सवाब है, एक हदीस में हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ का सवाब एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है। सिवाए मस्जिदे हराम के। क्यों के मस्जिदे हराम में बा जमात नमाज़ पढ़ने का सवाब दूसरी मस्जिदों के मुक्काबले में एक लाख नमाज़ों से अफ़ज़ल है। (तरगीब व तरहीब)

एक और रिवायत में मस्जिदे नब्वी की एक नमाज़ का सवाब पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर बताया गया है।

(इब्ने माजा)

मस्जिदे नब्वी में चालीस नमाज़ें

मदीना मुनब्बरा के क़याम में अफ़ज़ल तरीन अमल यह है के सरकारे दो आलाम ﷺ पर दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ा जाए और नमाज़ों को बा जमात मस्जिदे नब्वी में अदा किया जाए। मस्जिदे नब्वी में चालीस नमाज़ों की बड़ी

फ़ज़ीलत है।

हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिस ने मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें पढ़ीं, उन में से एक भी फ़ौत न हुई हो तो उस के लिय अल्लाह तआला की तरफ़ से तीन क्रिस्म की बरात का एलान है, यानी तीन क्रिस्म की मुसीबतों से हिफ़ाज़त का एलान है।

- (१) जहन्नम से हिफ़ाज़त (२) अज़ाबे इलाही से हिफ़ाज़त
(३) निफ़ाक़ से हिफ़ाज़त (मुस्नदे अहमद)

मदीना तय्यिबा से वापसी

मदीना तय्यिबा का क़याम जब पूरा हो जाए और वापसी का वक़्त आजाए तो यक़ीनन वह वक़्त ईमान वाले के लिये एक सानेहा से कम न होगा।

इस दिन आप ख़ास एहतेमाम से रुख़्सती ही के लिये रौज़-ए-अक्दस पर हाज़िर हों, पहले दो रकात रियाज़ुल जन्नह में पढ़ कर ख़ूब दुआ करें, अपनी दुआओं में यह दुआ ज़रूर करें के “ ऐ अल्लाह तेरे महबूब रसूल और इन की इस मस्जिद और इन के इस शहर और शहर वालों के हुकूक़ व आदाब की अदाइगी में जो कोताहियाँ मुझ से हुई उन को

अपने खास करम से माफ़ फ़रमा और मेरे हज व ज़ियारत को क़बूल फ़रमा, मुझे यहाँ से महरूम न फ़रमा और मेरी हाज़री आख़री हाज़री न हो, इस के बाद भी मुझे यहाँ की हाज़री की तौफ़ीक़ दे, क़यामत के दिन अपने रसूल की शफ़ाअत और आप का कुर्ब नसीब फ़रमा। इस के बाद रौज़-ए-अक़दस पर हाज़िर हों सलात व सलाम अर्ज़ करें, इस्तिफ़ार व शफ़ाअत की फ़िर दरख़्वास्त करें, और इस की कोशिश करें के रुख़्सत के कुछ आँसू निकल आएँ के यह क़बूलियत की अलामात में से है, फ़िर रोना न आए तो रोने वालों की सी सूरत बनाएं और चलते वक़्त हो सके तो कुछ सदक़ा करें और वापसी में सफ़र के आदाब की रिआयत के साथ वापस हों।

उठ के साक्रिब गो चला आया हूँ उस की बज़्म से दिल की तस्कीन का मगर सामान उसी महफ़िल में है

हजे बदल के फ़ज़ाइल व मसाइल

हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है के हुज़ूर अकरम صلی اللہ علیہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह तआला (हजे बदल में) एक हज की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाते हैं, एक मरहूम (जिस की तरफ़ से हजे बदल किया जा रहा है)

दूसरा हज करने वाला, तीसरा वह शख्स जो हज को भेज रहा है। (तरगीब व तरहीब)

एक औरत अल्लाह के नबी के पास आई और कहा के ऐ अल्लाह के नबी ! मेरी माँ मर गई और उस ने हज नहीं किया, तो क्या मैं उस की तरफ़ से हज कर दूँ? आप ने फ़रमाया हाँ, उस की तरफ़ से हज कर ले। (मुस्लिम)

अबू रज़ीं कहते हैं के मैं हुज़ूर ﷺ के पास आया और अर्ज़ किया के ऐ अल्लाह के नबी ! मेरे वालिद बहुत बुढे हैं, हज व उमरह करने की उन में ताक़त नहीं है, वह सफ़र भी नहीं कर सकते, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया तुम अपने बाप की तरफ़ से हज व उमरह कर लो। (तिर्मिज़ी व मुस्लिम)

इबादत की तीन क्रिस्में हैं

इबादतें तीन तरह की हैं :

- १) माली इबादत जैसे ज़कात, सदक़-ए-फ़ित्र इन में दूसरे को नाइब बना कर अदा करा देना जाइज़ है।
- २) बदनी इबादत : जैसे नमाज़, रोज़ा इन में किसी को नाइब नहीं बनाया जासकता, यानी कोई किसी की तरफ़ से नमाज़ नहीं पढ़ सकता, रोज़ा नहीं रख सकता।

३) वह इबादत जो बदनी भी है, माली भी है : जैसे हज इस में नाइब उस वक़्त बनाया जा सकता है जब खुद वह शख्स जिस पर हज फ़र्ज़ है अदा करने पर कुदरत न रखता हो, अगर खुद हज करने की ताक़त रखता है तो दूसरे से नहीं करवा सकता ।

अलबत्ता नफ़्ल हज और नफ़्ल उमरह दूसरे से करवा सकता है हर सूरत में चाहे कराने वाला कुदरत रखता हो या न रखता हो ।

मसअला : जिस शख्स पर हज फ़र्ज़ हो गया, और उस को हज करने का वक़्त भी मिला और कुदरत भी थी, मगर किसी वजह से हज नहीं किया, फिर वह हज करने से माज़ूर और आजिज़ हो गया और आईदा भी वह हज कर सके ऐसी कुदरत होने की बज़ाहिर कोई उम्मीद भी नहीं रही, मसलन कोई ऐसा बीमार हो गया के जिस से शिफ़ा की उम्मीद नहीं, या नाबीना या लंगड़ा या अपाहज हो गया या बुढ़ापे की वजह से ऐसा कमज़ोर हो गया के खुद सवारी पर सवार नहीं हो सकता तो इस के ज़िम्मे फ़र्ज़ है के वह अपनी तरफ़ से किसी दूसरे को भेज कर हजे बदल खुद करा दे या वसियत कर दे के

मेरे मरने के बाद मेरी तरफ़ से मेरे माल से हजे बदल करा देना ।

मसअ्ला : अगर ऐसे माज़ूर आदमी ने अपना फ़र्ज़ हज किसी को भेज कर अपनी ज़िन्दगी में करवा दिया, बाद में इत्तेफ़ाक़ से वह तन्दुरुस्त और अच्छा हो गया तो अब खुद हज अदा करना उस पर फ़र्ज़ है और पहला जो हजे बदल करवाया था वह नफ़ली हो जाएगा ।

मसअ्ला : इसी तरह अगर औरत के पास हज कर सके इतना रुपया है मगर साथ जाने के लिय कोई महरम नहीं मिलता या मिलता तो है मगर वह अपना ख़र्च नहीं कर सकता, इस के पास माल नहीं है, और औरत के पास भी इतनी गुन्जाइश नहीं है के वह उस का भी ख़र्च बरदाश्त करे तो उस औरत पर भी ज़रूरी है के वह अपनी तरफ़ से किसी को भेज कर हजे बदल कराए या वसियत करे ।

मसअ्ला : बेहतर है के हजे बदल ऐसे शख्स से कराया जाए जो अपना हज कर चुका हो, अगर किसी ऐसे आदमी से हजे बदल कराया जिस ने अभी तक हज नहीं किया है और उस पर फ़र्ज़ भी नहीं तो हजे बदल अदा हो जाएगा मगर ख़िलाफ़े औला होगा ।

अगर उस के ज़िम्मे अपना हज फ़र्ज़ होने के बावजूद हज नहीं किया तो उस के लिये दूसरे के वासते हजे बदल पर जाना जाइज़ नहीं है, मकरूहे तहरीमी और गुनाह है, मगर हजे बदल कराने वाले का हज फिर भी अदा हो जाएगा। (एहकामे हज)

मक्रामाते क़बूलियते दुआ

यूँ तो मक्का मुकर्रमा में हर जगह दुआ क़बूल होती है, लेकिन बाज़ खास मक्रामात पर खुसूसियत से दुआ क़बूल होती है, इस लिये इन मक्रामात पर खास तौर से दुआ माँगनी चाहिये वह मक्रामात यह हैं।

- १) बैतुल्लाह पर पहली निगाह पड़ने के वक़्त।
- २) मताफ़ यानी तवाफ़ करने की जगह।
- ३) मुलतज़म यानी बैतुल्लाह के दरवाज़े और हज़े अस्वद के दर्मियान बैतुल्लाह की दीवार का हिस्सा।
- ४) मीज़ाबे रहमत यानी बैतुल्लाह के परनाले के नीचे।
- ५) बैतुल्लाह के अन्दर।
- ६) हतीम के अन्दर (जो बैतुल्लाह का हिस्सा है)
- ७) हज़े अस्वद और रुक्ने यमानी के दर्मियान।
- ८) मुस्तज़ार यानी रुक्ने यमानी और खान-ए-काबा के इस

बन्द दरवाज़े के दर्मियान जो मौजूदा दरवाज़े की पुश्त पर
यानी गरबी जानिब था ।

- ९) ज़मज़म के कुंवे के पास ।
- १०) मक्कामे इब्राहीम के पीछे ।
- ११) सफ़ा पर ।
- १२) मरवा पर ।
- १३) मसआ यानी सई करने की जगह पर ।
- १४) मीलैन अरुजरैन यानी दो हरे सुतूनों के दर्मियान ।
- १५) अरफ़ात में खास कर जब्ले रहमत के पास ।
- १६) मुज़दलिफ़ा में खास कर मशअरे हराम के पास ।
- १७) मिना में ।
- १८) जमरात के पास , इन सब जगहों पर खुसूसियत से
दुआएँ क़बूल होती हैं ।

मक्का के तारीखी और मुतबरक मक्कामात

- १) जन्नतुल मुअल्ला : मक्का मुकर्रमा का क़ब्रस्तान है
और बकी यानी मदीना के क़ब्रस्तान के सिवा बाक़ी तमाम
क़ब्रस्तानों से अफ़ज़ल है, इस की ज़ियारत भी मुस्तहब है ।
- २) जब्ले अबू कुबैस: मस्जिदे हराम से बाहर सफ़ा से

मुत्तसिल (मिला हुआ) (एक पहाड़ है जिस पहाड़ पर चढ़ कर हुज़ूर ﷺ ने कुरैश को इस्लाम की दावत दी थी, यहाँ बनू हाशिम आबाद थे और इसी में वह घाटी थी जिस में तीन साल तक हुज़ूर ﷺ के साथ बनू हाशिम का बाइकाट हुआ था। इस जगह आज शाही महल बना हुआ है।

३) **मौलदुन्नबी** : वह जगह जहाँ हुज़ूर ﷺ की पैदाइश हुई, सफ़ा से मुअल्ला जाने वाले रास्ते पर सीधी जानिब शोअ्बे बनी आमिर में सड़क के किनारे वाक़े है, अब यहाँ एक लाइब्रेरी क्राइम है।

४) **ग़ारे हिरा** : जबले नूर में वह ग़ार है जहाँ हुज़ूर ﷺ नुबुव्वत मिलने से पहले क़याम फ़रमाते थे और इसी ग़ार में पहली वही नाज़िल हुई थी, ताइफ़ के रास्ते पर मक्का से तक्बरीबन देढ़ मील के फ़ासले पर है।

५) **हज़रत ख़दीजतुल कुबरा का मकान** : जब आप सफ़ा से मरवा की तरफ़ आएँ तो आप के सीधी जानिब की सड़क पर एक बाज़ार है जिस को मौलदे सैय्यदा फ़ातिमा कहा जाता है, इसी बाज़ार में एक गली है जिस में दोनों जानिब सोने चान्दी की दुकानें हैं, वहीं हज़रत ख़दीजा का मकान था।

जिस में शादी के बाद आप ﷺ ने क़याम फ़रमाया था और पहली वही के बाद आप ﷺ इसी घर में आए थे और हज़रत खदीजा ने तसल्ली दी थी , इसी मकान में हज़रत फ़ातिमा और दीगर साहब ज़ादियाँ और साहब ज़ादे कासम, अब्दुल्लाह पैदा हुए थे ।

६) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक رضي الله عنه का मकान : मुहल्ला मिसफ़ला के ज़काक सवाग़ैन नामी ग़ली में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक رضي الله عنه का मकान था, जहाँ अब मस्जिदे अबूबक्र बनी हुई है, हिजरत की रात में आप ﷺ इसी मकान में तशरीफ़ ले गए थे ।

७) ग़ारे सौर : हिजरत के सफ़र में आप ﷺ ने तीन रोज़ इसी ग़ार में क़याम किया था, यह ग़ार जबले सौर में वाक़े है, यह पहाड मक्का से तक़रीबन ६ मील के फ़ासले पर है ।

८) हज़रत अली رضي الله عنه का मकान : मुहल्ला सुकुललैल में आप رضي الله عنه के मक़ामे पैदाइश से जहाँ अब लाइब्रेरी है चौथा मकान हज़रत अली का था ।

९) हज़रत हमज़ा رضي الله عنه का मकान : मक्का में जहाँ मस्जिदे

हमज़ा है वहीं पर हज़रत हमज़ा عليه السلام का मकान था, इसी मकान में हज़रत हमज़ा की पैदाइश हुई थी।

१०) बनू हाशिम का मुहल्ला : जबले अबू कुबैस के दामन में आप صلی اللہ علیہ وسلم की जाए पैदाइश के मशिकी गली में जहाँ आज कल हिफ़जे कुर्आन का मद्रसा है इसी जगह पर बनू हाशिम का मुहल्ला आबाद था, यहाँ शारे बनू हाशिम के नाम से एक सड़क बनी हुई है, यहीं पर कभी कुरैश रहा करते थे।

११) दारे अरक़म : हज़रत अरक़म عليه السلام का वह मकान जहाँ इस्लाम के इब्तेदाई ज़माने में मुसलमान हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के साथ छुप कर नमाज़ पढ़ा करते थे और कुर्आन और दीन को सीखा करते थे, अब यह मकान सई की जगह पर दरवाज़े में तब्दील हो गया है, इस का नाम है “बाबे अरक़म” इसी जगह हज़रत उमर عليه السلام इस्लाम लाए थे, मुसअब इब्ने उमैर भी इसी जगह आकर मुसलमान हुए थे।

१२) मस्जिदे जिन : ताइफ़ से वापसी पर मक्का से करीब आप صلی اللہ علیہ وسلم ने नमाज़ पढ़ी तो कुर्आन सुन कर जिन्नात जमा हो

गए और मुसलमान हो गए इस जगह पर मस्जिदे जिन बनी हुई है, जो दो सड़कों के बीच में है। हरम से शोअब आमिर की तरफ आते वक़्त मुहल्ला शोअबे आमिर और मुहल्ला सुलैमानिया के दर्मियान सड़क पर नज़र आती है वही “मस्जिदे जिन” है।

१३) मस्जिदे राअ्यह : रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़तहे मक्का के रोज़ इस जगह झन्डा नसब फ़रमाया था, जन्नतुल मुअल्ला के रास्ते में है इस जगह अब मस्जिद बनी हुई है।

१४) मस्जिदे तर्न्ईम : जिस जगह से हज़रत आइशा رضي الله عنها ने एहराम बाँध कर उमरह किया था, मक्का से शुमाल की जानिब तीन मील पर है, इस को मस्जिदे आइशा भी कहते हैं।

१५) मस्जिदे ग़ैम : वादिये मुहस्सब के पास मुहल्ला मुआबदा में वाक्के है, इस को मस्जिदे इजाबा भी कहते हैं।

१६) मस्जिदे ज़ी तुवा : तर्न्ईम के रास्ते में है, रसूलुल्लाह ﷺ हालते एहराम में इस जगह उतरे थे।

१७) मस्जिदे ख़ैफ़ : मिना में बड़ी मस्जिद है, कहते हैं इस में सत्तर नबी मदफून हैं।

१८) मस्जिदे नम्रह : अरफ़ात के किनारे पर बड़ी मस्जिद है।

१९) मस्जिदे मशअरुल हराम : मुज्दलिफ़ा में बड़ी मस्जिद है, हज्जतुल वदा में हुज़ूर ﷺ पूरी रात ज़िक्र व फ़िक्र और इबादत में मशगूल रहे थे।

२०) मस्जिदे इस्तराहा : मिना से वापसी पर मक्का में दाखले से पहले जो मुहल्ला मुआबदा है, इसी इलाके में एक मस्जिद है, १३, ज़िल हिज्जा को हज से वापसी पर आप ﷺ ने ज़ोहर और असर पढ़ी थी और कुछ देर आराम भी किया था, इस लिये इस को मस्जिदे इसतराहा कहते हैं।

२१) मस्जिदे अलकबश : हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने अपने बेटे इस्माईल عليه السلام को जिस जगह कुर्बान करने के लिये लिटाया था और अल्लाह ने कुर्बानी को क़बूल फ़रमा कर दुम्बा भेज दिया था, इस जगह हज़रत मुआविया ने मस्जिद तामीर करवाई थी इस को “मस्जिदे अलकबश” कहते हैं।

२२) ग़ारे मुरसलात : मस्जिदे खैफ़ के जुनूबी हिस्से में एक छोटा ग़ार है, आप ﷺ ने इस पहाड़ की छाओं में आराम फ़रमाया था, इसी जगह सूरए मुरसलात नाज़िल हुई थी, इस लिये इस को “ग़ारे मुरसलात” कहते हैं।

२३) मस्जिदे जिअराना : ताइफ़ के रास्ते में हरम की हद है। ताइफ़ से आते हुए आप ﷺ ने इस जगह से एहराम बाँधा था, यहाँ अब मस्जिद बनी हुई है, “मस्जिदे जिअराना”

मदीना के तारीखी और मुतबरस्क मक़मात

१) जन्नतुल बक़ी : मदीना मुनव्वरा का क़दीम क़ब्रस्तान है, जिस में बे शुमार बड़े बड़े सहाबा और औलिया मदफून हैं, यह क़ब्रस्तान दुनिया के सारे क़ब्रस्तानों से अफ़ज़ल है।

२) उहुद पहाड़ : मदीना से तीन मील पर एक पहाड़ है जिस के बारे में हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया युहिब्बुना वनुहिब्बुहू तर्जमा : यह हम से मुहब्बत करता है और हम इस से मुहब्बत करते हैं, यहाँ पर मशहूर जंग हुई थी, जिस में हुज़ूर ﷺ भी ज़ख़मी हुए और सत्तर सहाबा शहीद हुए।

३) मस्जिदे कुबा : मदीना से दो मील के फ़ासले पर मस्जिद है इस मस्जिद का ज़िक्र कुर्आन में भी आया है इस में दो रकात नमाज़ का सवाब उमरह के बराबर है।

४) मस्जिदे जुमा : कुबा से मदीना आते हुए रास्ते में मुहल्ला बनू सालिम था जहाँ आप ﷺ ने हिजरत के वक़्त पहला जुमा अदा किया था, इस जगह मस्जिद बनी हुई है।

५) मस्जिदे मुसल्ला या ग़ामा : वह जगह है जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ईदैन की नमाज़ पढ़ा करते थे और इस जगह आप ने इस्तेसक्रा की नमाज़ पढ़ाई थी।

६) मस्जिदे अहज़ाब या मस्जिदे फ़तह : ग़ज़्व-ए-अहज़ाब में इस जगह खन्दक़ खोदी गई थी, रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन दिन पीर, मंगल, बुध को दुआ फ़रमाई, अल्लाह तआला ने दुआ क़बूल की और मुसलमानों को फ़तह हुई।

७) मस्जिदे जुबाब : ग़ज़्व-ए-खन्दक़ में इस जगह पर रसूलुल्लाह ﷺ का खेमा नसब था और आप ने नमाज़ भी पढ़ी थी।

८) मस्जिदे क़िब्लतैन : वादीये अक़ीक़ के क़रीब एक टीले पर यह मस्जिद है इस में एक मेहराब बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ है और दूसरी काबा की जानिब, काबा की तब्दीली का वाक़िआ इसी मस्जिद में हुआ था, इस लिये इस को मस्जिदे क़िब्लतैन कहते हैं, मस्जिदे नब्वी से ३ मील पर है।

९) मसाजिदे खम्सा : जिस जगह खन्दक़ की लड़ाई हुई थी उस जगह पर पाँच मस्जिदें बनी हुई हैं, मस्जिदे फ़तह,

मस्जिदे सलमान फ़ारसी رضي الله عنه, मस्जिदे अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه

मस्जिदे उमर फ़ारूक رضي الله عنه, मस्जिदे अली رضي الله عنه ।

१०) मस्जिदे अलफ़ज़ीह : अवाली में है, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इस जगह यहूदे बनी नज़ीर के मुहासरे के वक़्त नमाज़ पढ़ी थी, फ़ज़ीह खज़ूर की शराब को कहते हैं, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी رضي الله عنه एक जमात के साथ शराब पीने में मशगूल थे, जब शराब की हुरमत नाज़िल हुई तो उन्होंने सारे मटके शराब के गिरा दिये । इस लिये इस मस्जिद को मस्जिदे फ़ज़ीह कहते हैं । इस का नाम मस्जिदे शम्स भी है ।

११) मस्जिदे बनी कुरैज़ा : मस्जिदे फ़ज़ीह से मशिरक में थोड़े फ़ासले पर है । यहूदे बनी कुरैज़ा के मुहासरे के वक़्त रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इस जगह क़याम फ़रमाया था और हज़रत साद बिन मुआज़ को यहूदे ने हक़म मुक़र्रर फ़रमाया था उन्होंने इसी जगह फ़ैसला सुनाया था के मरदों को क़तल किया जाए, बच्चों और औरतों को कैद किया जाए ।

१२) मस्जिदे अजाबह : जन्नतुल बक़ी से शुमाल की जानिब है, यह मस्जिद आबादी के दर्मियान वाक़े है, इस को

मस्जिदे बनू मुआविया भी कहा जाता है, कियों के कभी यहाँ बनू मुआविया रहा करते थे, एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने इस में नमाज़ पढ़ी और देर तक दुआ की, इस के बाद फ़रमाया मैं ने अपने रब से तीन दुआएँ कीं एक यह के मेरी उम्मत क़हत साली से हलाक न हो, दूसरी यह के मेरी उम्मत इजतेमाई तौर पर गर्क़ न हो, यह दो दुआएँ क़बूल हुई तीसरी यह के बाहम इख़्तेलाफ़ और ख़ाना जंगी न हो, यह क़बूल न हुई।

१३) मस्जिदे उबई बिन कअ्ब : बक्री से मुत्तसिल है, इस जगह उबई बिन कअ्ब का मकान था, रसूलुल्लाह ﷺ यहाँ अक्सर तशरीफ़ लाते थे और नमाज़ पढ़ते थे।

१४) बिअरे अरीस : मदीना में कुबा के क़रीब एक कुंवां है, इस का पानी निहायत साफ़ और सफ़ाफ़ और मीठा था, रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा तशरीफ़ लाए पाँव लटका कर मन पर बैठ गए, इस के बाद हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه व उस्मान رضي الله عنه तशरीफ़ लाए, वह भी हुज़ूर ﷺ की इत्तेबा में इसी तरह बैठ गए, आप ﷺ ने इस का पानी पिया, वुज़ू किया और लुआबे दहन इस में डाला, इस को बिअरे ख़ातम भी कहते

हैं, क्योंकि हज़रत उस्मान के हाथ से ख़ातम नबुव्वत गिर गई थी, आप ﷺ ने बहोत तलाश कराई मगर न मिली।

१५) बिअरे बज़ाआ : यह कुंवां मदीना मुनव्वरा में था, जहाँ आप ﷺ और सहाबा गुस्ल फ़रमाते थे और यहाँ तशरीफ़ लाकर आप ﷺ कपड़े धोते थे, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में इस का ज़िक्र है मगर अब यह कुंवां मौजूद नहीं है।

१६) बिअरे रूमा : मदीना से तीन मील पर कुंवां था, पहले यहूदी का था, मुसलमानों की तकलीफ़ पर हज़रत उस्मान رضي الله عنه ने ख़रीद कर वक़फ़ कर दिया था।

१७) बिअरे अहन : यह भी कुंवां था इसी तरह “बिअरे बुस्सा” और बिअरे ग़रस भी था।

१८) बैरहा : यह हज़रत अबू तल्हा رضي الله عنه का बाग़ था, हुज़ूर ﷺ अक्सर यहाँ तशरीफ़ लाते और इस का पानी पीते, यह सात कुंवे मशहूर थे इस के अलावा मदीने में और भी कुंवे थे, जिन का पानी हुज़ूर ﷺ और सहाबा ने इस्तेमाल किया था। मसलन बीअरे अना, बीअरे अवाफ़, बीअरे अनस, बीअरुलहज़ारिम, बीअरुलसक़्या, बीअरे अबू अय्यूब,

बीअरे उरवह, बीअरे ज़रदान जिस में लबीद यहूदी ने हुज़ूर ﷺ पर जादू कर के बाल कँधे में बाँध कर दफ़न किये थे, बीअरे क़वीम, बीअरुस्सफ़िया, बीअरे बुवैता, बीअरे फ़ातिमा ।

१९) मक्कामे ग़ज़व-ए-बद्र : बद्र एक गांव का नाम है जो पहाड़ियों में आबाद है, इसी गांव की एक वादी में इस्लाम की सब से पहली जंग हई जिस का नाम जंगे बद्र है, यह बस्ती मक्का से तीन सौ किलो मीटर और मदीना से देढ़ सौ किलो मीटर दूर है, अब इस जगह बड़ी आबादी है और एक मस्जिद भी बनी हुई है, जिस का नाम “मस्जिदे अरीश” है, इसी के करीब एक चार दीवारी में शोहदा-ए-बद्र मदफून हैं ।

तवाफ़ के सात फ़ेरों की और मौक़ा महल की बाज़ दुआँ

हमें हर मौक़े महल पर अमल का तरीक़ा और दुआँ बताई गई हैं जिस से वह अमल इबादत और अल्लाह के कुर्ब का ज़रिया बनता है, लिहाज़ा हमें इस सफ़र में सुन्नत और मौक़ा महल की दुआओं की ख़ूब रिआयत करना चाहिय ।

घर से निकलने की दुआ

घर से या क्रयाम गाह से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़े तो इन्शाअल्लाह शैतान और दुश्मनों से हिफ़ाज़त होगी और हर मुश्किल आसान हो जाएगी।

“بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ”

(तिर्मिज़ी २/१८१)

तर्जमा : अल्लाह के नाम से सफ़र शुरू करता हूँ, अल्लाह/ही पर भरोसा करता हूँ, गुनाहों से हिफ़ाज़त और इबादत पर कुदरत अल्लाह की मदद के बग़ैर मुम्किन नहीं हो सकती।

“اللَّهُمَّ بِكَ أَصُولٌ وَبِكَ أَحْوَالٌ وَبِكَ أَسِيرٌ”

(हिस्ने हसीन) तर्जमा : ऐ अल्लाह तेरी मदद से हमला करता हूँ और तेरी मदद से तदबीर करता हूँ और तेरी मदद से सफ़र करता हूँ, चलता हूँ।

सवारी पर सवार होनी की दुआ

सवारी पर यह दुआ पढ़ कर सवार हो जाए :

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرْنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ
وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

(मुस्लिम १/४३४ तिर्मिज़ी २/१८३)

तर्जमा : अल्लाह की ज्ञात पाक है, जिस ने उस को हमारे इख्तियार में दिया है और हम इस को अपने क़ाबू में करने के अहल नहीं थे और हम अपने रब के पास ज़रूर लौटने वाले हैं।

दौराने सफ़र पढ़ते रहने की दुआ

दौराने सफ़र यह दुआ पढ़ते रहा करें:

”اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِعْنَا بَعْدَهُ
اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِي
الْأَهْلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ
الْمُنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ“

(मिशकात १/२१३)

तर्जमा : ऐ अल्लाह हमारे इस सफ़र को हम पर आसान फ़रमा और इस की दूरी को हम पर समेट दे, ऐ अल्लाह आप ही सफ़र में हमारे रफ़ीक़ हैं और आप ही हमारे अहल व अयाल की देख भाल करने वाले हैं, ऐ अल्लाह मैं आप के दरबार में सफ़र की मशक़क़त से पनाह चाहता हूँ, और पनाह चाहता हूँ बुरी हालत देखने से और वापस आकर घर में बच्चों और माल में बुरी हालत देखने से।

हुदूदे हरम में दाखिल होने की दुआ

जब हरम के हुदूद में दाखिल होने लगे तो यह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا حَرَمُكَ وَحَرَمُ رَسُولِكَ فَحَرِّمْ
لَحْيِي وَدَمِي وَعَظْمِي وَبَشْرِي عَلَى النَّارِ اللَّهُمَّ
آمِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ“

(गुनय्यह ९६, काज़ी खान १/३१५)

तर्जमा : ऐ अल्लाह बेशक यह तेरा और तेरे रसूल पाक का हरम है, पस तू मेरा गोशत, खून, हड्डी, चमड़ा जहन्नम पर हराम फ़रमा। ऐ अल्लाह इस दिन के अज़ाब से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा।

तवाफ़ शुरू करने की दुआ

तवाफ़ शुरू करते वक़्त यह दुआ पढ़े :

”بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ وَ لِلَّهِ الْحَمْدُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
عَلَى رَسُولِ اللَّهِ اللَّهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيقًا بِكِتَابِكَ
وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّتِ نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ“

(काज़ी खान १/३१६)

तर्जमा : अल्लाह के नाम से तवाफ़ शुरू करता हूँ, अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह ही के लिये हर तारीफ़ है और दुरूद व सलाम अल्लाह के रसूल ﷺ पर नाज़िल हो, ऐ अल्लाह तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ और तेरे अहद को पूरा करने और तेरे नबी की सुन्नत की इत्तेबा में हज़रे अस्वद को चूमता हूँ।

तवाफ़ के सात फ़ेरों की दुआएँ

यह बात याद रखें के तवाफ़ के सात फ़ेरों की अलग अलग दुआएँ उलमा ने लिखी हैं, यह सारी दुआएँ ला अलात तअय्यून हुज़ूर ﷺ से साबित हैं, लेकिन इस खास तरतीब से मन्कूल नहीं है, इस लिये इन के अलावा भी दुआएँ पढ़ी जा सकती हैं, अलबत्ता रुकने यमानी और हज़रे अस्वद के दर्मियान की दुआ खास इस तरतीब से साबित है।

तवाफ़ के पहले चक्कर की दुआ

तवाफ़ के पहले चक्कर में यह दुआ पढ़ें :

” سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ

أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ،

وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
 وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَتَصَدِيقًا بِكَلِمَاتِكَ وَوَفَاءً
 بِعَهْدِكَ وَإِتِّبَاعًا لِسُنَّتِ نَبِيِّكَ وَحَبِيبِكَ سَيِّدِنَا
 مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ“

(काज़ी खान १/३१६)

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ
 الدَّائِمَةَ فِي الدِّينِ وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ
 وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ“

(हिस्ने हसीन २२२ मुन्तखब शुदा)

तर्जमा : अल्लाह की ज्ञात हर ऐब से पाक है, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिय है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, अल्लाह बहुत बड़ा है, इस की मदद के बग़ैर गुनाहों से बचा नहीं जा सकता, और इसी की मदद से इबादत पर कुदरत होती है, अल्लाह बहुत बड़ा है और बहुत बड़ी अज़मत वाला है, हुज़ूर ﷺ पर दुरूद व सलाम नाज़िल हो, ऐ अल्लाह हम तुझ पर ईमान लाने की हालत में और तेरे कलिमात की तस्दीक कर के और अहद को पूरा करते हुए

और तेरे नबी की सुन्नत की इत्तेबा में तवाफ़ करते हैं, ऐ अल्लाह बे शक मैं तुझ से अफ़व और सलामती का सवाल करता हूँ, और दीन और दुनिया और आखिरत में दाइमी दरगुज़र और हुसूले जन्नत और जहन्नम से नजात के साथ कामयाबी की दरख्वास्त करता हूँ।

रुकने यमानी और हज़्रे अस्वद के दर्मियान पढ़ने की दुआ

तवाफ़ के सातों चक्करो में जो अलग अलग दुआएँ हैं, वह रुकने यमानी तक पूरी कर लें, फिर रुकने यमानी और हज़्रे अस्वद के दर्मियान यह दुआ पढ़ें। यह इस वक़्त में पढ़ना हदीस से साबित है। लिहाज़ा सातों चक्करो में रुकने यमानी और हज़्रे अस्वद के दर्मियान यह दुआ पढ़ें :

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ، رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ
حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (تبيين الحقائق: ۲/ ۱۸) وَأَدْخِلْنَا
الْجَنَّةَ مَعَ الْأَبْرَارِ يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ“

(तबीनुलहकाइक: २/१८)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं आप से दुनिया और आखिरत की भलाई और माफ़ी चाहता हूँ, ऐ हमारे रब हम को दुनिया और आखिरत की भलाई अता फ़रमा और जहन्नम के अज़ाब से हम को बचा ले, और जन्नत में नेक लोगों के साथ हम को दाखिल फ़रमा, तू बड़ा ग़ालिब और बड़ा बख़शिश करने वाला, दोनों जहाँ का पालन्हार है।

तवाफ़ के दूसरे चक्कर की दुआ

तवाफ़ के दूसरे चक्कर में यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتِكَ وَالْحَرَمَ حَرَمِكَ
 وَالْاَمْنَ اَمْنُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَبْنُ
 عَبْدِكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِدِيكَ مِنَ النَّارِ، فَحَرِّمْ
 لِحُومَنَا وَبِشْرَتَنَا عَلَى النَّارِ، اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا
 الْاِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا وَكِّرْهُ اِلَيْنَا الْكُفْرَ
 وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ وَاَجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ “

(हिस्ने हसीन मुर्तजिम : १९३)

“اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ”

(हिस्ने हसीन ८७)

“اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي جَنَّتَكَ بِغَيْرِ حِسَابٍ”

तर्जमा : ऐ अल्लाह यह तेरा ही घर है, हरम तेरा ही हरम है, यहाँ का अमन व अमान तेरा ही कायम किया हुआ है और हर बन्दा तेरा ही बन्दा है और मैं भी तेरा ही बन्दा हूँ और तेरा ही बन्दा ज़यादा हूँ, यह मक़ाम तेरी मदद से जहन्नम की आग से पनाह और हिफ़ाज़त का है, पस हमारे गोश्त और चमड़े को जहन्नम पर हराम कर दे, ऐ अल्लाह हमें ईमान की मुहब्बत अता फ़रमा, और हमारे दिलों को ईमान के नूर से मुनव्वर कर दे और कुफ़्र व फ़िस्क़ से हमें नफ़रत अता फ़रमा और हम को हिदायत याफ़्ता लोगों में शामिल फ़रमा, ऐ अल्लाह मुझ को क़यामत के दिन के अज़ाब से बचा, जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा, ऐ अल्लाह हम को बग़ैर हिसाब किताब ज़न्नत अता फ़रमा ।

तवाफ़ के तीसरे चक्कर की दुआ

तवाफ़ के तीसरे चक्कर में यह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشَّرِكِ وَالشِّقَاقِ

وَالنِّفَاقِ وَسُوءِ الْأَخْلَاقِ وَسُوءِ الْمُنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ

(तबीय्युनुल हक्काइक २/१७) “ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ وَالْوَلَدِ ”

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ

مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخِزْيِ

(तबयीनुल हक्काइक : २/१७) “ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ”

तर्जमा : ऐ अल्लाह में तेरे दीन और एहकाम में शक करने से पनाह माँगता हूँ, मैं पनाह माँगता हूँ किसी को तेरा हमसर बनाने से और तेरे एहकाम की मुखाल्लिफ़त करने से और निफ़ाक़ से, सूए अख़लाक़ से, बुरी चीज़ देखने से, और पनाह माँगता हूँ माल, अहल व अयाल और औलाद की तब्दीली से ।

ऐ अल्लाह मैं क़ब्र के फ़ितने ते, तेरे दरबार में पनाह माँगता हूँ, और ज़िन्दगी और सक्राते मौत की सख़्तियों से पनाह माँगता हूँ और दुनिया और आख़िरत की रुस्वाई से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ।

तवाफ़ के चौथे चक्कर की दुआ

तवाफ़ के चौथे चक्कर में यह दुआ पढ़े :

” اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُورًا وَسَعْيًا مَشْكُورًا

وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَعَمَلًا صَالِحًا مَقْبُولًا وَتِجَارَةً لَنْ

تَبُورَ (ज़ैअली : १७/२) يَا عَلِيمُ مَا فِي الصُّدُورِ أَخْرِجْنِي

يَا اللَّهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ

مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ

إِثْمٍ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ“ (तिरमिज़ी १०९/१) وَالْفُوزَ بِالْجَنَّةِ

وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ“ (हसन हसीन : ३२१) رَبِّ قِنِّعْنِي بِهَا

رَزَقْتَنِي وَبَارِكْ لِي فِيهَا أَعْطَيْتَنِي وَاخْلُفْ عَلَيَّ كُلِّ

غَائِبَةٍ لِي مِنْكَ بِخَيْرٍ“ (किताबुल मनासिक ३९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरे इस हज को हज मबरूर और हज मक्बूल बना, और मेरी इस कोशिश को ठिकाने पर लगा और मेरे गुनाहों की बख्शिश फ़रमा, और मेरे इस अमल को

क्रबूल तरीन अमले सालेह बना और इस को ऐसी तिजारत बना जिस में कोई घाटा न हो, ऐ दिलों की बातों के जान्ने वाले, ऐ अल्लाह मुझे तारीकी से निकाल कर उजालें में दाखिल फ़रमा।

ऐ अल्लाह बे शक मैं तेरी रहमत के हुसूल के ज़राए और तेरी बख़्शिश के रास्ते और गुनाह से सलामती की इल्तिमास करता हूँ और हर नेकी पर काइम रहने और जन्नत की काम्याबी और जहन्नम से नजात की इल्तिमास करता हूँ।

ऐ मेरे रब इस रोज़ी पर क़नाअत अता फ़रमा जो तू ने मुझे दी है, और मुझे बरकत अता फ़रमा इन चीज़ों में जो तू ने मुझे अता फ़रमाई हैं, और तू ख़ैर के साथ मेरी हर इस चीज़ का निगहबान बन जा, जो मुझ से गाइब है।

तवाफ़ के पाँचवें चक्कर की दुआ

तवाफ़ के पाँचवें चक्कर में यह दुआ पढ़ें :

”اللَّهُمَّ اِظْلِنِي تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِيَ اِلَّا وَجْهُكَ، وَاسْقِنِي مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شُرْبَةً هَنِئِيَّةً مَرِيئَةً لَا نَظْمًا بَعْدَهَا اَبَدًا“ (ज़ैलइ २/१७)

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ
 سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ
 شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى
 اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ
 وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ“

(तिर्मिज़ी २/१९२)

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعِيمَهَا وَمَا يُقَرِّبُنِي
 إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ
 وَمَا يُقَرِّبُنِي إِلَى النَّارِ مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ“

(हिस्ने हसीन ३२०)

तर्जमा : ऐ अल्लाह जिस दिन तेरे अर्श के साये के अलावा कोई साया न होगा, उस दिन मुझे अर्श के साये के नीचे जगह अता फ़रमा और तेरी ज़ात के अलावा कोई बाक़ी रहने वाला नहीं है और मुझ को अपने नबी मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के हौज़ से सैराब कर दे और ऐसा खुश ज़ाइक़ा पानी पिला दे जिस के बाद फ़िर प्यास न लगे, ऐ अल्लाह मैं तुझ से हर उस चीज़ का

सवाल करता हूँ, जिस को तेरे नबी ﷺ ने सवाल किया था और मैं हर उस चीज़ के शर से पनाह माँगता हूँ जिस से तेरे नबी मुहम्मद ﷺ ने पनाह माँगी है, और तू ही मददगार और तू ही काफ़ी है और अल्लाह की मदद के बग़ैर मुसीबत से हिफ़ाज़त और इबादत पर कुदरत नहीं हो सकती, ऐ अल्लाह बे शक मैं तुझ से जन्नत और इस की नेमतों का सवाल करता हूँ और इस चीज़ का सवाल करता हूँ जो क्रौल , फ़ेल और अमल से मुझ को जन्नत में पहुँचा दे, और मैं जहन्नम के अज़ाब से पनाह माँगता हूँ और क्रौल फ़ेल और अमल में से हर इस चीज़ से पनाह माँगता हूँ जो मुझ को जहन्नम से करीब कर दे।

तवाफ़ के छटे चक्कर की दुआ

तवाफ़ के छटे चक्कर में यह दुआ पढ़े :

” اللَّهُمَّ إِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوقًا كَثِيرَةً فِيمَا بَيْنِي
 وَبَيْنَكَ، وَحُقُوقًا كَثِيرَةً فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَ خَلْقِكَ،
 اللَّهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا فَاعْفِرْهُ لِي وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ
 فَتَحَبَّلْهُ عَنِّي وَاعْنِنِي بِحَلَالِكَ عَنِ حَرَامِكَ
 وَبِطَاعَتِكَ عَنِ مَعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنَّ يَبْتِكَ عَظِيمٌ
 وَوَجْهَكَ كَرِيمٌ وَأَنْتَ يَا اللَّهُ حَلِيمٌ كَرِيمٌ عَظِيمٌ
 تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي“

(किताबुल मनासिक ४५)

तर्जमा : ऐ अल्लाह बे शक तेरे मेरे ऊपर बे शुमार हुकूक हैं जो तेरे और मेरे दर्मियान में हैं , और बे शुमार हुकूक मेरे और तेरी मख्लूक के दर्मियान में हैं, ऐ अल्लाह इन में से जो हुकूक तेरे हैं तू उसे माफ़ फ़रमा दे और जो तेरी मख्लूक के हैं उन को अपनी मख्लूक से बख़्शवाने की ज़िम्मेदारी ले ले, और मुझ को हलाल कमाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हराम से हिफ़ाज़त फ़रमा, ऐ अल्लाह तेरी इताअत के ज़रिये से मासियत से हिफ़ाज़त और तेरे फ़ज़ल से ग़ैरों के मोहताज बन्ने और एहसान मन्द होने से हिफ़ाज़त फ़रमा , ऐ बोत ज़्यादा बख़्शाने वाले, ऐ अल्लाह बे शक तेरा घर बड़ी अज़मत वाला है और तेरी ज़ात करम वाली है, ऐ अल्लाह तू बड़ा बुर्दबार करम वाला है और अज़मत वाला है, माफ़ करने को तू पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा मुझे माफ़ कर दे।

तवाफ़ के सातवें चक्कर की दुआ

तवाफ़ के सातवें चक्कर में यह दुआ पढ़ें :

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيْمَانًا كَامِلًا وَيَقِيْنًا صَادِقًا
وَرِزْقًا وَاسِعًا وَقَلْبًا خَاشِعًا وَلِسَانًا ذَاكِرًا وَحَلَالًا
طَيِّبًا وَتَوْبَةً نَّصُوْحًا وَ تَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَرَاحَةً
عِنْدَ الْمَوْتِ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ
عِنْدَ الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ
بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ، رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا
وَالْحَقِيْنِي بِالصَّالِحِيْنَ “

(किताबुल मनासिक ४९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह बे शक मैं आप से कामिल ईमान और सच्चा यकिन और वसीअ रिज़क़ का सवाल करता हूँ और खुशू करने वाला दिल और ज़िक्र करने वाली ज़बान, पाक हलाल कमाई और सच्ची तौबा और मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ और मौत के वक़्त आसानी और मरने के बाद मग़्फ़रत और रहमत और हिसाब व किताब के वक़्त माफ़ी

और दरगुज़र और जन्नत की कामयाबी और जहन्नम से तेरी
रहमत से नजात चाहता हूँ, ऐ बड़े ग़ालिब और बड़ी बख्शिश
करने वाले, ऐ मेरे रब मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर, और मुझ को
आखिरत में नेक लोगों के साथ शामिल कर।

तवाफ़ की दो रकात के बाद

मक़ामे इब्राहीम पर पढ़ने की दुआ

तवाफ़ की दो रकात पढ़ कर मक़ामे इब्राहीम पर जाकर
आदम अलौहिस्सलाम वाली दुआ पढ़े, दुआए आदम की
फ़ज़ीलत यह है के जो इस दुआ को पढ़े गा अल्लाह उस के
तमाम गुनाहों को माफ़ करेगा और उस की तमाम परेशानियों
को दूर करेगा फिर कभी फ़क्र व फ़ाक़ा की नौबत न आएगी
और दुनिया ज़लील हो कर उस के पास आएगी।

” اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي فَأَقْبَلْ
مَعْدِرَتِي وَتَعْلَمُ حَاجَتِي فَأَعْطِنِي سُؤْلِي وَتَعْلَمُ
مَا فِي نَفْسِي فَأَغْفِرْ لِي ذُنُوبِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ
إِيمَانًا يَبَاشِرُ قَلْبِي وَيَقِينًا صَادِقًا حَتَّى أَعْلَمَ أَنَّهُ لَا

يُصِيبُنِي إِلَّا مَا كَتَبْتَ لِي وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِي يَا

(फ़तहुर क़दीर: २/४५७)

أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ “

तर्जमा : ऐ अल्लाह तू मेरे ज़ाहिर और बातिन को खूब जानता है, मेरा उज़्र क़बूल फ़रमा, तू मेरी हाजत को जानता है लिहाज़ा मेरी तलब पूरी फ़रमा, और तू मेरे दिल की बात जानता है, मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह मैं तुझ से ईमाने रासिख और यक़ीने सादिक़ का सवाल करता हूँ, जो मेरे दिल में उतर जाए, हत्ता के मैं जान लूँ के मुझ को सिर्फ़ इतनी मिक्दार पहुँच सकती है जितना तू ने मेरे लिये लिख दिया है और मैं तुझ से इस चीज़ पर रज़ामन्दी तलब करता हूँ जितना तू ने मेरे लिये मुक़द्दर कर रखा है, ऐ तमाम रहम करने वालों में ज़ियादा रहम करने वाले।

मुलतज़म पर पढ़ने की दुआ

मुलतज़म ख़ान-ए-काबा के दरवाज़े और हज़रे अस्वद के दर्मियान बैतुल्लाह की दीवार का हिस्सा है, हुज़ूर ﷺ इस जगह बच्चे की तरह लिपट कर दुआ करते थे, इस जगह अगर मौक़ा मिल जाए तो यह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا بَيْتُكَ الَّذِي جَعَلْتَهُ مُبَارَكًا وَهُدًى
 لِلْعَالَمِينَ، اللَّهُمَّ كَمَا هَدَيْتَنِي لَهُ فَتَقَبَّلْ مِنِّي وَلَا
 تَجْعَلْ هَذَا آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِكَ وَارْزُقْنِي الْعُودَ
 إِلَيْهِ حَتَّى تَرْضَى عَنِّي بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ“

(मराक्रीउल फ़लाह ४०१)

तर्जमा : ऐ अल्लाह बेशक यह तेरा वह घर है जिस को तूने
 तमाम आलम के लिय बरकत और हिदायत का ज़रिया
 बनाया है, ऐ अल्लाह जिस तरह तूने मुझे इस हज के लिये
 हिदायत दी इसी तरह मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा और मेरे इस
 सफ़र को अपने घर का आखरी सफ़र न बना और दोबारा
 लौट कर आना नसीब फ़रमा यहाँ तक के तू मुझ से राज़ी हो
 जाए, ऐ अरहमुर्राहिमीन अपनी रहमत से मेरी दुआ क़बूल
 फ़रमा।

मीज़ाबे रहमत के नीचे पढ़ने की दुआ

बैतुल्लाह के परनाले के नीचे भी दुआएँ क़बूल होती हैं
 इस को मीज़ाबे रहमत कहते हैं, इस जगह यह दुआ पढ़े :

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيْمَانًا لَا يَزُولُ وَيَقِينًا
 لَا يَنْفَدُ وَمُرَافَقَةً نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
 اللَّهُمَّ أَظْلَمَنِي تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّ
 عَرْشِكَ وَأَسْقِنِي بِكَأْسِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
 شَرْبَةً لَا أَظْمَأُ بَعْدَهَا أَبَدًا “

(तबीयुनुल हक्काइक २/१७)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से ऐसा ईमान माँगता हूँ जो कभी
 खतम न हो और तेरे नबी ﷺ का साथ माँगता हूँ, ऐ
 अल्लाह मुझे उस दिन अपने अर्श का साया अता फ़रमा जिस
 दिन अर्श के साए के अलावा कोई साया न होगा और
 मुहम्मद ﷺ के प्याले से ऐसा शरबत पिला दे के उस के बाद
 कभी प्यास न लगे।

ज़मज़म पीने की दुआ

ज़मज़म पीते वक़्त यह दुआ पढ़े :

” اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا وَشِفَاءً
 مِنْ كُلِّ دَاءٍ “

(काज़ी खन : १/१३९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफ़ा देने वाला इल्म , वसीअ रिज़्क और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।

सफ़ा पर चढ़ने की दुआ

सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ते वक़्त यह दुआ पढ़े :

”بِسْمِ اللَّهِ اَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ اِنَّ الصَّفَاَ وَالْمَرْوَةَ

(गुन्यतुन नासिक : ६८) ”مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ“

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम ले कर वहाँ से शुरू करता हूँ जहाँ से अल्लाह तआला ने शुरू फ़रमाया, बेशक सफ़ा और मरवा दोनों अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं।

सफ़ा और मरवा पर

खड़े हो कर पड़ने की दुआ

सफ़ा पहाड़ी पर खड़े हो कर बैतुल्लाह की तरफ़ रुख कर के तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ कर अल्लाह से दुआ माँगे और मरवा पर भी यही दुआ पढ़े :

”لَا اِلَهَ اِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا اِلَهَ

إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعُدَّةٌ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ

“الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ” (मुस्लिम: १/३९९, गुनयतुन्नासिक ६९)

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक्र नहीं, वह तन्हा है इस का कोई हमसर नहीं, इसी के लिये मुल्क है, इसी के लिये तमाम तारीफें हैं, वही ज़िन्दा करता है, वही मारता है, वही हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक्र नहीं, वह तन्हा है, इस ने अपना वादा पूरा फ़रमाया, और अपने बन्दे की मदद की, और तन्हा उस ने लश्करों को शिकस्त दी।

मीलैन अखज़रैन के दर्मियान पढ़ने की दुआ

सई करते हुए जब हरे सुतूनों के पास पहुँचे तो यह दुआ पढ़े:

”رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ”

(गुनयतुन्नासिक ६८) “إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ”

तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार मेरी मफ़िरत फ़रमा, और मुझ पर रहम फ़रमा, उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा जो तेरे इल्म में है, बेशक तू ही सब पर ग़ालिब और ज़ियादा करम करने वाला है।

मीलैन अरबज़रैन के बाद

मरवा की तरफ़ चलने की दुआ

जब हरे सुतूनों से मरवा की तरफ़ बढ़े तो यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ اسْتَعْمِلْنِيْ بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ عَلَى مِلَّتِهِ وَاَعِزَّنِيْ مِنْ مُضَلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ” (तबीयुनुल हक्काइक २/२०)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मुझ को मुहम्मद ﷺ की सुन्नत का पाबन्द बना और मुझ को आप ﷺ के दीन पर मौत अता फ़रमा और हर गुम्राह कुन फ़ितनों से अपनी रहमत के ज़रिय से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रहेम करने वाले मुझे अपनी रहमत से नवाज़।

अरफ़ात की तरफ़ जाते हुए पढ़ने की दुआ

९ ज़िलहिज्जा को अरफ़ात की तरफ़ रवाना होते वक़्त यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَوَجَّهَكَ ”

أَرَدْتُ فَاجْعَلْ ذَنْبِي مَغْفُورًا وَحَاجًّا مَبْرُورًا وَارْحَمْنِي
وَلَا تُخَيِّبْنِي وَبَارِكْ فِي سَفَرِي لِئِذَا وَقَضِ بِعَرَافَاتٍ
حَاجَتِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

(ज़ैलइ २/२३)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जा होता हूँ और तुझ पर भरोसा करता हूँ और तेरी ज़ात का इरादा रखता हूँ, लिहाज़ा मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मेरे हज को क़बूल फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे नामुराद न बना और मेरे सफ़र में बरकत अता फ़रमा और मैदाने अरफ़ात में मेरी हाजत पूरी फ़रमा, बे शक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

जब्ले रहमत पर नज़र पड़ते वक़्त पढ़ने की दुआ

मैदाने अरफ़ात में जब जब्ले रहमत पर नज़र पड़े तो यह

दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَوَجَّهَكَ

اَرَدْتُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَتُبْ عَلَيَّ وَاَعْطِنِيْ سُوْلِيْ

وَوَجَّهْ لِيْ الْخَيْرَ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ سُبْحَانَ اَللّٰهِ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ“

(ज़ैलइ २/२३)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जा होता हूँ और तुझ पर भरोसा करता हूँ और तेरी ज़ात का इरादा करता हूँ, ऐ अल्लाह मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मेरी मुराद मुझे अता फ़रमा, हर क़िस्म की ख़ैर को मेरी तरफ़ मुतवज्जा फ़रमा जिधर मैं मुतवज्जा होता हूँ, अल्लाह की ज़ात पाक है, हर तारीफ़ अल्लाह के लिये है अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है।

मैदाने अरफ़ात में सब से अफ़ज़ल दुआ

हज़ूर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया मैं ने और मुझ से पहले नबियों ने मैदाने अरफ़ात में जो दुआएँ की हैं उन में सब से अफ़ज़ल दुआए तौहीद है वह यह है :

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

(तिर्मिज़ी २/१९२, हिस्ने हसीन १८४)

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह तन्हा है, उस का कोई शरीक़ नहीं, उसी के लिय मुल्क है और

उसी के लिये तमाम तारीफें हैं, उसी के हाथ में तमाम भलाई है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है, अगर हो सके तो इस दुआ को अरफ़ात में सौ मर्तबा पढ़े, यह चौथा कलिमा है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه से मनकूल है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया जो मुसलमान अरफ़ा के दिन ज़वाल के बाद मैदाने अरफ़ात में क़िब्ला रुख हो कर

” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ “ (सौ मर्तबा)

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ

يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ { (सौ मर्तबा)

” اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا

صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ

مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ

وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ “ (सौ मर्तबा)

पढ़े गा तो अल्ला तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएंगे ।

ऐ मेरे फ़रिश्तो ! इस बन्दे की क्या जज़ा है जिस ने मेरी तस्बीह व तहलील तकबीर व ताज़ीम तारीफ़ व सना की और मेरे रसूल ﷺ पर दरूद भेजा ऐ मेरे फ़रिश्तो ! तुम गवाह रहो, मैं ने इस को बख़्श दिया और इस की शफ़ाअत क़बुल की और अगर वह अहले अरफ़ात के लिये शफ़ाअत करता तो भी मैं क़बूल करता । (दुर्गे मन्सूर, बहवाला बैहक्री)

मुज्दलिफ़ा की रात में पढ़ने की दुआ

मुज्दलिफ़ा की रात में यह दुआ कसरत से पढ़ें :

” اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَرَزُقَنِىْ فِىْ هٰذَا الْمَكَانِ

جَوَامِعِ الْخَيْرِ كُلِّهِ وَاَنْ تَصْرِفَ عَنِّىْ السُّوْءَ كُلَّهُ فَاِنَّهُ

لَا يَفْعَلُ ذٰلِكَ غَيْرُكَ وَلَا يَجُوْدُ بِهٖ اِلَّا اَنْتَ “

(ज़ैलइ: २/२७)

तर्जमा : ऐ अल्लाह बे शक मैं तुझ से इस बात का सवाल करता हूँ के मुझ को इस मुक़द्दस मक़ाम में तमाम नेकियों और भलाइयों का मज्मुआ अता फ़रमा और मुझ से हर क़िस्म की बुराइयों को दूर फ़रमा, बे शक तेरे अलावा यह काम कोई

नहीं कर सकता, और न तेरे सिवा कोई दूसरा इस भलाई की बख्शिश कर सकता है।

मुज्दलिफ़ा से मिना पहुँच कर पढ़ने की दुआ

जब मुज्दलिफ़ा से मिना पहुँच जाए तो जमरात तक पहुँचने से पहले तलबिया कसरत से पढ़े और यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ هٰذِهِ مِنْى قَدْ اَتَيْتُهَا وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَبْنُ

عَبْدِكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَمُنَّ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى

(काज़ी खान १/३१७) “ اَوْلِيَّائِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ”

तर्जमा : ऐ अल्लाह यह मक़ाम मिना है जिस में मैं हाज़िर हुआ हूँ और मैं तेरा बन्दा हूँ और तेरा बन्दा ज़ादा हूँ, तुझ से यह सवाल करता हूँ के तू मुझ पर ऐसा एहसान फ़रमा जैसा के तू ने अपने औलिया और नेक बन्दों पर किया है , ऐ सब से बढ़ कर रहम करने वाले।

जमरात की रमी के बाद की दुआ

जमरात की रमी के बाद यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حَجًّا مَبْرُورًا وَاذْنَبًا مَغْفُورًا وَسَعِيًّا

(ज़ैलई : २/३०)

” مَشْكُورًا ”

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! इस को मेरे लिये हजे मबरूर बना और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मेरी कोशिश को क़बूल फ़रमा ।

हलक़ की दुआ

कुर्बानी के बाद सर मुन्डवाते वक़्त यह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ بَارِكْ فِي نَفْسِيْ وَاغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَاجْعَلْ لِيْ

بِكُلِّ شَعْرَةٍ مِنْهَا نُورًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ“ (क़ाज़ी ख़ान १/३१९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरे अन्दर बरकत अता फ़रमा और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और सर के इन बालों में से हर बाल के बदले में क़यामत के दिन एक एक नूर अता फ़रमा ।

मक्का मुअज़्ज़मा से वापसी की दुआ

तवाफ़े वदा के बाद दो रकात नमाज़ पढ़े, फ़िर हज़े अस्वद को बोसा दे, इस के बाद काबतुल्लाह की जुदाई पर अफ़सोस और हसरत के साथ ख़ूब गिड़गिड़ा कर रोए, रोना न आए तो रोने की सूत बनाए और हसरत की निगाह से बैतुल्लाह की तरफ़ देखता हुआ रोता हुआ मस्जिदे हराम से बाहर निकले और दरवाज़े पर खड़े हो कर यह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَذَا آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَيْنَتِكَ

(काज़ी खान १/३१९)

وَارْزُقْنِي الْعُودَ إِلَيْهِ“

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ آئِبُونَ
تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ
اللَّهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ“

(मुस्लिम १/४३५)

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरे इस सफ़र को अपने घर का अखरी सफ़र न बना और मेरे लिये दोबारा लौट कर आना मुक़द्दर फ़रमा, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह तनहा है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाहत है, उसी के लिये हर क्रिस्म की तारीफ़ है, वही हर चीज़ पर क़ादिर है, हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले है, अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं, अल्लाह ने अपना वादा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और उस ने तने तनहा लश्क़रों को शिकस्त दी ।

मदीना मुनव्वरा के करीब पहुँच कर पढ़ने की दुआ

जब मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रवाना हों तो रास्ते में कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें और जब मदीना के करीब पहुँच जाएँ तो यह दुआ पढ़ें :

”اللَّهُمَّ هَذَا حَرَمٌ رَسُوكَ فَاجْعَلِ الدُّخُولَ وَقَايَةً
مِنَ النَّارِ وَأَمَانًا مِنَ الْعَذَابِ وَسُوءِ الْحِسَابِ“

(काज़ी खान १/१३९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह यह आप के नबी ﷺ का हरम पाक है, इस हरम को मेरे लिये जहन्नम से बचाओ का ज़रिया बना और इस को मेरे लिये अज़ाब और बुरे हिसाब किताब से हिफ़ाज़त का ज़रिया बना ।

मदीना मुनव्वरा में दाख़ले के वक़्त पढ़ने की दुआ

जब मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हो जाए तो यह दुआ पढ़ें :

”بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ

صِدْقٍ وَارْزُقْنِي مِنْ زِيَارَةِ رَسُولِكَ مَا رَزَقْتَ
 أَوْلِيَاءَكَ وَأَهْلَ طَاعَتِكَ وَأَنْقِذْنِي مِنَ النَّارِ
 وَاغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي يَا خَيْرَ مَسْئُولٍ اللَّهُمَّ اجْعَلْ
 لَنَا فِيهَا قَرَارًا وَرِزْقًا حَسَنًا“

(गुनयतुन्नासिक ३७६)

तर्जमा : अल्लाह का नाम ले कर दाखिल होता हूँ जो अल्लाह ने चाहा वही होगा, अल्लाह की मदद के बगैर गुनाहों से बचना और इबादत की तौफ़ीक़ नहीं होती, ऐ मेरे रब मुझे का ईमान की सलामती के साथ अन्दर दाखिल फ़रमा और ईमान की सलामती के साथ मुझे वापस लौटा, और मुझे अपने रसूलुल्लाह ﷺ की ऐसी ज़ियारत नसीब फ़रमा जैसी तू ने अपने औलिया और नेक बन्दों को नसीब फ़रमाई है और जहन्नम की आग से बचा और मेरी मग़ि़रत फ़रमा और मुझे पर रहम फ़रमा, ऐ अल्लाह तू इन में सब से बेहतर है जिन से माँगा जाता है, ऐ अल्लाह हमारे लिये मदीना मुनव्वरा में बेहतरीन ठिकाना बना और अच्छा रिज़क़ मुक़दर फ़रमा ।

रौज़-ए-अक्दस पर सलात व सलाम

” الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ الصَّلَاةُ
وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ
يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ مِنْ جَمِيعِ خَلْقِ اللَّهِ، الصَّلَاةُ
وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ وُلْدِ آدَمَ، الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ- يَا رَسُولَ
اللَّهِ إِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ
وَأَشْهَدُ أَنَّكَ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَأَشْهَدُ أَنَّكَ يَا رَسُولَ
اللَّهِ قَدْ بَلَغْتَ الرِّسَالََةَ وَأَدَّيْتَ الْأَمَانَةَ وَنَصَحْتَ
الْأُمَّةَ وَكَشَفْتَ الْغُمَّةَ وَجَزَاكَ اللَّهُ عَنَّا خَيْرًا
جَزَاكَ اللَّهُ عَنَّا أَفْضَلَ وَأَكْمَلَ مَا جَزَى بِهِ نَبِيًّا
عَنْ أُمَّتِهِ اللَّهُمَّ أَعْطِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ

وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي
 وَعَدْتَهُ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ وَأَنْزِلْهُ الْمَنْزِلَ
 الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ إِنَّكَ سُبْحَانَكَ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

(फ़तहुलक़दीर)

तर्जमा : सलात व सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के रसूल,
 सलात व सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के हबीब, सलात व
 सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के मख़्लूक में सब से बेहतर,
 सलात व सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह की तमाम
 मख़्लूकात में सब से बरगुज़ीदा, सलात व सलाम हो आप पर
 ऐ औलादे आदम के सरदार, दरुद व सलाम हो आप पर ऐ
 अल्लाह के नबी, और उस की रहमतें और उस की बरकतें,
 या रसूलुल्लाह बेशक मैं इस की गवाही देता हूँ के अल्लाह के
 सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह तनहा है, उस का
 कोई हमसर नहीं, और मैं गवाही देता हूँ के आप उस के बन्दे
 और उस के रसूल हैं, और इस बात की गवाही देता हूँ के बे
 शक आप ने या रसूलुल्लाह रिसालत का हक़ अदा कर
 दिया, और अमानत अदा कर दी, और उम्मत की ख़ैर

ख्वाही फ़रमाई और उम्मत की बे चैनी दूर फ़रमाई , अल्लाह तआला आप को हमारी तरफ़ से बेहतरीन बदला अता फ़रमाए , अल्लाह तआला आप को हमारी तरफ़ से अफ़ज़ल और कामिल तरीन बदला अता फ़रमाए जैसे के किसी नबी को उस की उम्मत की तरफ़ से अदा किया जाता है, ऐ अल्लाह ! तू आप ﷺ को वसीला और फ़ज़ीलत और बुलन्द दर्जा अता फ़रमा, और उन को मक़ामे महमूद पर पहुँचा दे, जिस का तू ने वादा किया था, बे शक तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता, और आप ﷺ को अपने नज़दीक मुकर्रब दर्जा अता फ़रमा, बेशक आप पाक ज़ात हैं, और अज़ीम तरीन फ़ज़ल और एहसान वाले हैं।

रसूलुल्लाह के वसीले से शफ़ाअत की दुआ सलात व सलाम के बाद हुज़ूर ﷺ से इन अल्फ़ाज़ से शफ़ाअत की दरख्वास्त करे।

” يَا رَسُولَ اللَّهِ اسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ وَأَتَوَسَّلُ بِكَ إِلَى اللَّهِ فِي أَنْ أَمُوتَ مُسْلِمًا عَلَى مِلَّتِكَ وَسُنَّتِكَ “

(फ़तहल क़दीर ३/१८१)

तर्जमा : या रसूलल्लाह मैं आप से शफ़ाअत का तलबगार हूँ
 और अल्लाह के दरबार में आप का वसीला चाहता हूँ इस
 बात पर के मुसलमान होने की हालत में आप की सुन्नत व
 मिल्लत पर मरूँ ।

दूसरों की तरफ़ से सलाम

दूसरों ने अगर सलाम पेश करने के लिये कहा है तो हुज़ूर
 ﷺ की खिदमत में इस तरह सलाम पेश करे :

”الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ فُلَانٍ

بْنِ فُلَانٍ يَسْتَشْفِعُ بِكَ إِلَى رَبِّكَ“
 (मुअल्लिमुल हुज्जाज)

तर्जमा : या रसूलल्लाह आप पर दुरूद व सलाम हो, फुलां
 इबने फुलां (इस जगह उस का नाम लें) की तरफ़ से, वह
 आप से अपने रब के दरबार में शिफ़ाअत का तालिब है,
 लिहाज़ा अप उस के लिये और तमाम मुसलमानों के लिये
 शिफ़ाअत फ़रमाएँ। अगर बहुत सारे लोगों ने सलाम पेश
 किया है और उन का नाम याद नहीं तो इस तरह पेश करे :

”الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ جَمِيعٍ

مَنْ أَوْصَانِي بِالسَّلَامِ عَلَيْكَ“
 (मुअल्लिमुल हुज्जाज)

तर्जमा : या रसूलुल्लाह आप पर दुरूद व सलाम हो उन तमाम लोगों की तरफ़ से जिन्होंने मुझ को आप पर सलाम पेश करने की हिदायत की है।

हज़रत अबु बकर सिद्दीक رضي الله عنه पर सलाम

हज़रत अबू बकर सिद्दीक पर इस तरह सलाम पेश करें :

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ وَثَانِيَهُ فِي
الْغَارِ وَرَفِيقَهُ فِي الْأَسْفَارِ وَآمِينَهُ عَلَى الْأَسْرَارِ أَبَا
بَكْرٍ الصِّدِّيقِ جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(फ़तहुल क़दीर ३/८१)

तर्जमा : आप पर सलाम हो ऐ अल्लाह के रसूल के खलीफ़ा, ग़ार में उन के साथी, सफ़रों में उन के रफ़ीक़, उन के राज़ों के अमीन, अबू बकर सिद्दीक आप पर सलाम हो, अल्लाह तआला आप को उम्मते मुहम्मदिया की तरफ़ से जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए।

हज़रत उमर رضي الله عنه पर सलाम

”السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ الْفَارُوقَ“

الَّذِي أَعَزَّ اللَّهُ بِهِ الْإِسْلَامَ إِمَامَ الْمُسْلِمِينَ مَرْضِيًّا
حَيًّا مَيِّتًا جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمَّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا“

(फतहल कदीर २/८१)

तर्जमा : ऐ अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक आप पर सलाम हो, जिन के ज़रिए अल्लाह ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमाया, ऐ मुसलमानों के इमाम ज़िन्दगी और मौत में अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा, अल्लाह तआला आप को उम्मत मुहम्मदिया की तरफ़ से जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए।

जन्तुल बक़ी वालों पर अलफ़ाज़े सलाम
”السَّلَامُ عَلَيْكَ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ فَاِنَّا اِنْ شَاءَ
اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ (अबू दाऊद २/४६२) اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَهْلِ
الْبَقِيَعِ الْغُرَقَدِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ“

तर्जमा : ऐ ईमान वाली क़ौम तुम पर सलाम हो, बेशक हम इन्शाअल्लाह तआला तुम से मिलने वाले हैं, ऐ अल्लाह अहले बक़ी की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह हमारी और इन की मग़फ़िरत फ़रमा।

मदीना मुनव्वरा से वापसी की दुआ

जब मदीना मुनव्वरा से वतन वापसी का इरादा हो तो मस्जिदे नबवी में रियाजुल जन्नह में दो रकात पढ़ कर रौज़-ए-अतहर पर हाज़िर हो कर सलात व सलाम पढ़े, इस के बाद ख़ूब दुआएँ करें और फिर यह दुआ पढ़े :

” اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ الْعَهْدِ بِنَبِيِّكَ
وَمَسْجِدِهِ وَحَرَمِهِ وَيَسِّرْ لِي الْعُوْدَ اِلَيْهِ وَالْعُكُوْفَ
لَدَيْهِ وَاَرْزُقْنِي الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَرُدَّنَا اِلَى اَهْلِنَا سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ اٰمِنِيْنَ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ “

(काज़ी ख़ान १/३१९)

तर्जमा : ऐ अल्लाह तेरे नबी के साथ और मस्जिदे नबवी के साथ और हरम नबवी के साथ इस ज़ियारत को आख़री ज़ियारत न बना और मेरे लिये दोबारा लौट कर आने का सामान आसानी के साथ फ़रमा दे और यहाँ आकर ठहरना आसान फ़रमा दे, और दुन्या व आख़िरत में मेरे लिये आफ़्रियत और सलामती मुक़द्दर फ़रमा और हम को अपने

अहल व अयाल के पास सही व सालिम और अज्र व सवाब के साथ वापस फ़रमा दे, या अरहमुर्राहिमीन अपनी रहमत से मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ।

ख़तम शुद

बिफ़ज़िलही तआला हज का रिसाला पूरा हुवा, आख़िर में अहेकर नाकारा तमाम ज़ाइरीन से बसद इलतेजा गुज़ारिश करता है के इस मुबारक सफ़र में मौक़ा महेल पर जहाँ आप अपने लिए दुआएँ करें तो हो सके तो अहेकर को भी अपनी दुआओं में शामिल रखें ।

يارب صل وسلم دائماً ابدا
على حبيبك خير الخلق كلهم

اللهم تقبل منا انك انت السميع العليم وتب
علينا انك انت التواب الرحيم الله اكبر كبيرا
والحمد لله كثيرا وسبحان الله بكرة واصيلا
والله الموفق والمستعان-

तालिबे दुआ

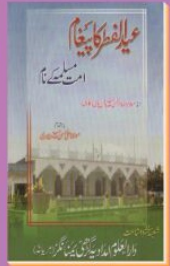
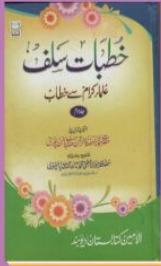
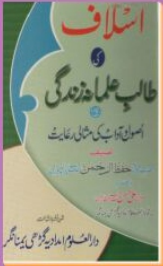
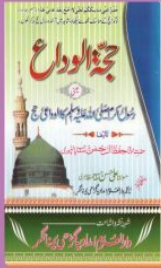
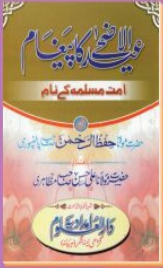
हिफ़ज़ुरहीमान पालनपुरी (काकोसी)

मोअल्लिफ की दीगर मुफीद किताबें

१	अस्लाफ की तालिबे इलमाना जिंदगी	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
२	मोहब्बते रसूल नकल व अकल की रौशनी में	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
३	आसान हज (उर्दू, हिंदी, गुजराती)	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
४	उदुल फित्र का पैगाम उम्मते मुस्लिमा के नाम	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
५	खुत्बाते दअवत (जिलद अब्वल) बयानात मवलाना अहमद लाट साहब	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
६	शबे बराअत का पैगाम उम्मते मुस्लिमा के नाम	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
७	रमज़ानुल मुबारक तरबियत का महीना	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
८	इदुल अज़हा का पैगाम उम्मते मुस्लिमा के नाम	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
९	हज्जतुल बदाअ	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
१०	शबे कद्र का पैगाम उम्मते मुस्लिमा के नाम	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है

११	हज का पैगाम ममते मुस्लिमा के नाम	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
१२	खुत्बाते सलफ (जिल्द अब्बल) उलमा-ए-किराम से खिताब	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
१३	खुत्बाते सलफ (जिल्द दौम) उलमा-ए-किराम से खिताब	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
१४	खुत्बाते सलफ (जिल्द सौम) उलमा-ए-किराम से खिताब	मन्ज़रे आम पर आ चुकी है
१५	खुत्बाते सलफ (जिल्द चाहरुम) तुलबा-ए-किराम से खिताब	ज़ेरे तबअ
१६	खुत्बाते सलफ (जिल्द पन्जुम) तुलबा-ए-किराम से खिताब	ज़ेरे तबअ
१७	रसूलुल्लाह की अखलाकी ज़िंदगी	ज़ेरे तबअ
१८	नफहतुद दअवह बत्तब्लीग (अरबी)	ज़ेरे तबअ
१९	मेअराज का सफर	ज़ेरे तबअ

مؤلف کی دیگر مطبوعات



مکتبہ ابن عباس (مسیبی)

Mobile: 9967300274
9323872161